Government Degree College Kaffota
District Sirmaur, Himachal Pradesh

Ranking of Government Colleges in HP – 2025

Criterion 1: Teaching Learning

Key Indicator 1.2: Curriculum Planning and Implementation

Metric 1.2.3: Curriculum Enrichment Practices

Contents

1 TEACHING LEARNING 1

1.2. Curriculum Planning and Implementation 1

1.2.3. Curriculum Enrichment Practices 1

Response: 4 x 4 (Number of Practices Observed) = 16 1

i. Projects 1

ii. Surveys 17

iii. Educational Tours 42

iv. Industry Visits 44

RANKING FRAMEWORK

1 TEACHING LEARNING

1.2. Curriculum Planning and Implementation

1.2.3. Curriculum Enrichment Practices

Response: 4 x 4 (Number of Practices Observed) = 16

All four practices observed (Projects, Surveys, Educational Tours, Industry Visits)

Government Degree College Kaffota, Himachal Pradesh adopts multiple curriculum enrichment practices to supplement the university-prescribed syllabus and to enhance experiential, participatory, and skill-oriented learning. These practices are implemented at the departmental level in alignment with course objectives and local relevance.

i. Projects

Students are assigned course-related projects as part of internal assessment and continuous evaluation. These projects encourage independent learning, application of theoretical concepts, data collection, analysis, and academic writing. Project work helps students develop research aptitude, critical thinking, and subject-specific competencies.

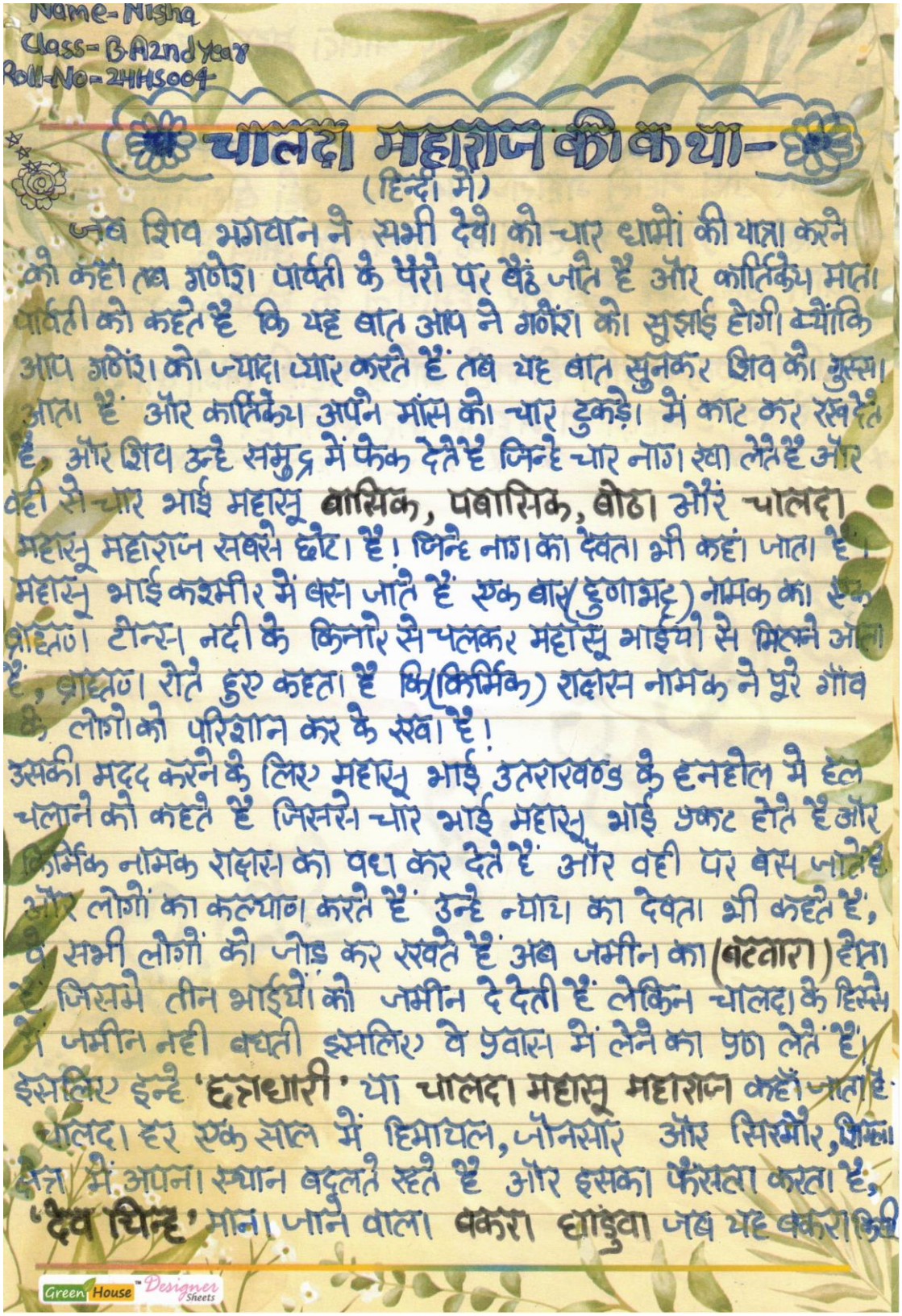

Name- Nisha
Class- B.A 2nd Year
Roll-No- 24HS004

चालदा महाराज की कथा-
(हिन्दी में)

जब शिव भगवान ने सभी देवो को चार धामों की यात्रा करने को कहा तब गणेशा पार्वती के पैरो पर बैठ जाते है और कार्तिकेय माता पार्वती को कहते है कि यह बात आप ने गणेशा को सुझाई होगी क्योंकि आप गणेशा को ज्यादा प्यार करते हैं तब यह बात सुनकर शिव को गुस्सा आता हैं और कार्तिकेया अपने मांस को चार टुकड़ा में काट कर रख देते है, और शिव उन्हे समुद्र में फेंक देते है जिन्हे चार नागा खा लेते है और वही से चार भाई महासू बासिक, पबासिक, बोठा और चालदा महासू महाराज सबसे छोटा है। जिन्हे नागा का देवता भी कहा जाता है। महासू भाई कश्मीर में बस जाते हैं एक बार (हुणाभट्ट) नामक का एक ब्राह्मणा टौन्सा नदी के किनारे से चलकर महासू भाईयो से मिलने आता हैं, ब्राह्मणा रोते हुए कहता है कि (किर्मिक) राक्षस नामक ने पूरे गाँव के लोगो को परेशान कर के रखा है।
उसकी मदद करने के लिए महासू भाई उत्तराखण्ड के हनहोल मे हल चलाने को कहते है जिससे चार भाई महासू भाई प्रकट होते है और किर्मिक नामक राक्षस का वध कर देते हैं और वही पर बस जाते है और लोगों का कल्याण करते हैं उन्हे न्याय का देवता भी कहते हैं, वे सभी लोगों को जोड़ कर रखते हैं अब जमीन का (बटवारा) होता है जिसमे तीन भाईयों को जमीन दे देती हैं लेकिन चालदा के हिस्से में जमीन नही बचती इसलिए वे प्रवास में लेने का प्रण लेते हैं। इसलिए इन्हे 'छत्रधारी' या चालदा महासू महाराज कहा जाता है चालदा हर एक साल में हिमाचल, जौनसार और सिरमौर, शिमला क्षेत्र में अपना स्थान बदलते रहते है और इसका फैसला करता है, 'देव चिन्ह' माना जाने वाला बकरा घाडुवा जब यह बकरा किसी

Green House Designer Sheets

Figure 1: Project I page 1

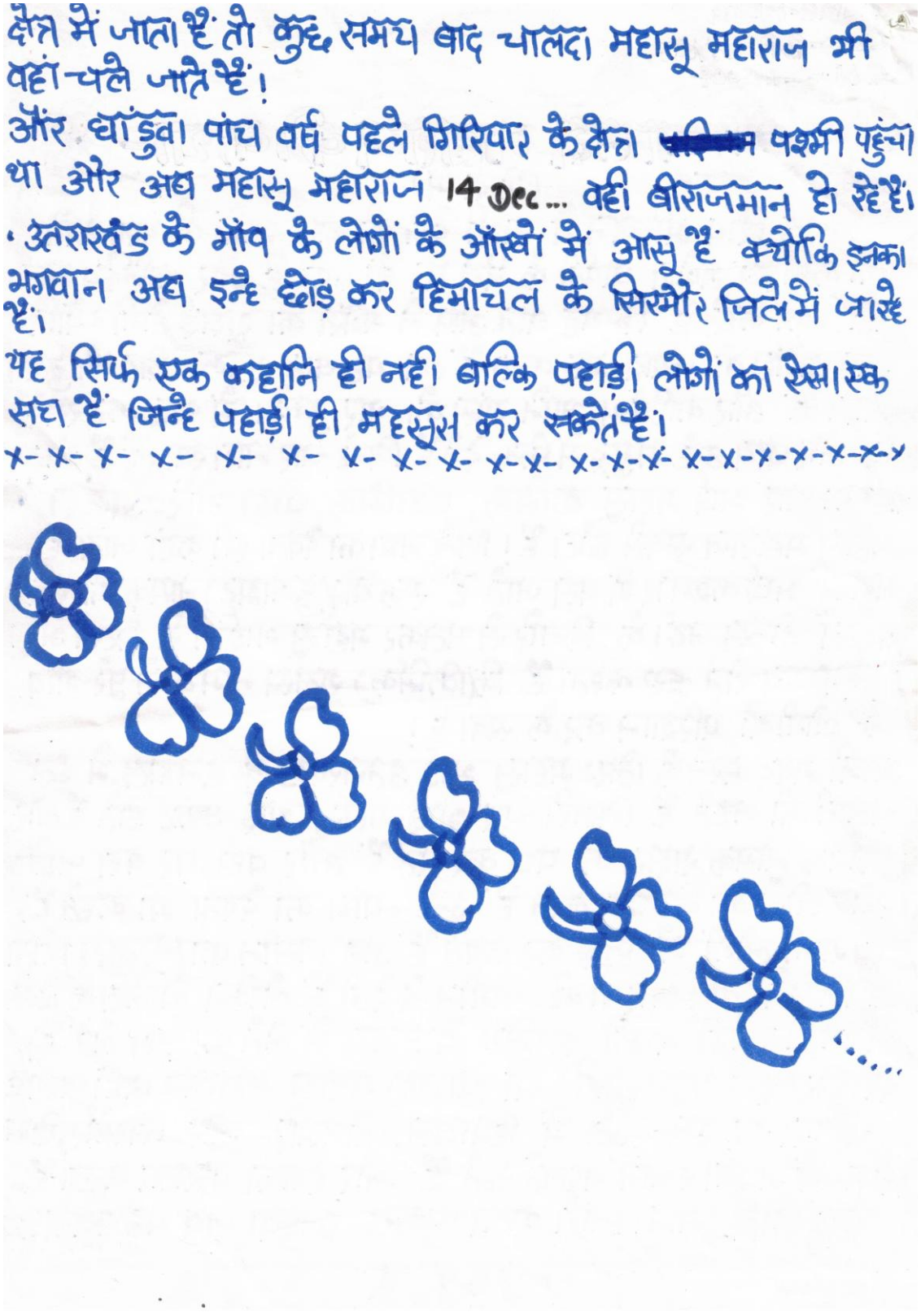

Figure 2: Project I page 2

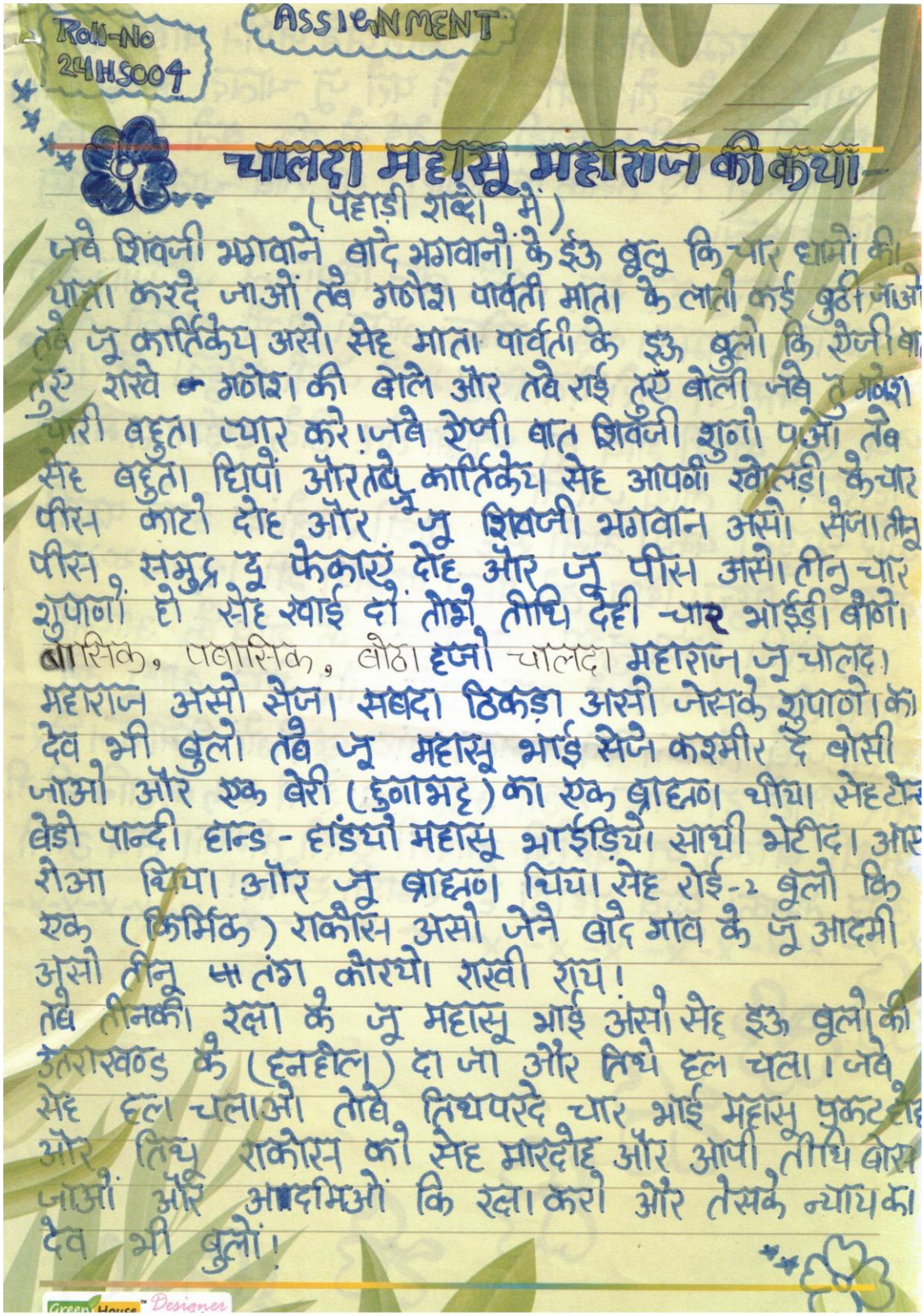

Roll-No
24HS004

ASSIGNMENT

चालदा महासू महाराज की कथा
(पहाड़ी शब्दों में)

जबे शिवजी भगवाने बादे भगवानों के इऊ बुलु कि चार धामों की यात्रा करदे जाओं तबे गणेश पार्वती माता के लातो कई बुठी जाओ तबे जू कार्तिकेय असो सेह माता पार्वती के इऊ बुलो कि ऐजी बाबा तुएं राखे गणेश की बोले और तबे राई तुएं बोली जबे तू गणेश भारी बहुत प्यार करे। जबे ऐजी बात शिवजी शुणो पाओ तबे सेह बहुत घिपों और तबे कार्तिकेय सेह आपणी खोपड़ी के चार पीस काटो दोह और जू शिवजी भगवान असो सेजा तीनु पीस समुद्र दु फेकारि दोह और जू पीस असो तीनु चार शुपाणों हो सेह खाई दों तोभी तीधि देही चार भाईड़ी बोणों। बासिक, पबासिक, बोठा इजो चालदा महाराज जू चालदा महाराज असो सेजा सबदा ठिकड़ा असो जेसके शुपाणो का देव भी बुलो तबे जू महासू भाई सेजे कश्मीर दे बोसी जाओ और एक बेरी (हुणाभट्ट) का एक ब्राह्मण थीया सेह टौन्स बेडो पान्दी हान्ड-हांड्यो महासू भाईड़ियों साथी भेटीदा और रोआ चिया और जू ब्राह्मण चिया सेह रोई-2 बुलो कि एक (किर्मिक) राकौस असो जेने बादे गांव के जू आदमी असो तीनू तंग कोरयो राखी राय!
तबे तीनकी रक्षा के जू महासू भाई असो सेह इऊ बुलो की उत्तराखण्ड के (हनहोल) दा जा और तिथे हल चला। जबे सेह हल चलाओ तोबे तिथपरदे चार भाई महासू प्रकट होए और तिनू राकौस को सेह मारदोह और आपी तीधि बोस जाओं और आदमिओं कि रक्षा करो और तेसके न्याय का देव भी बुलों।

Green House Designer

Figure 3: Project II page 1

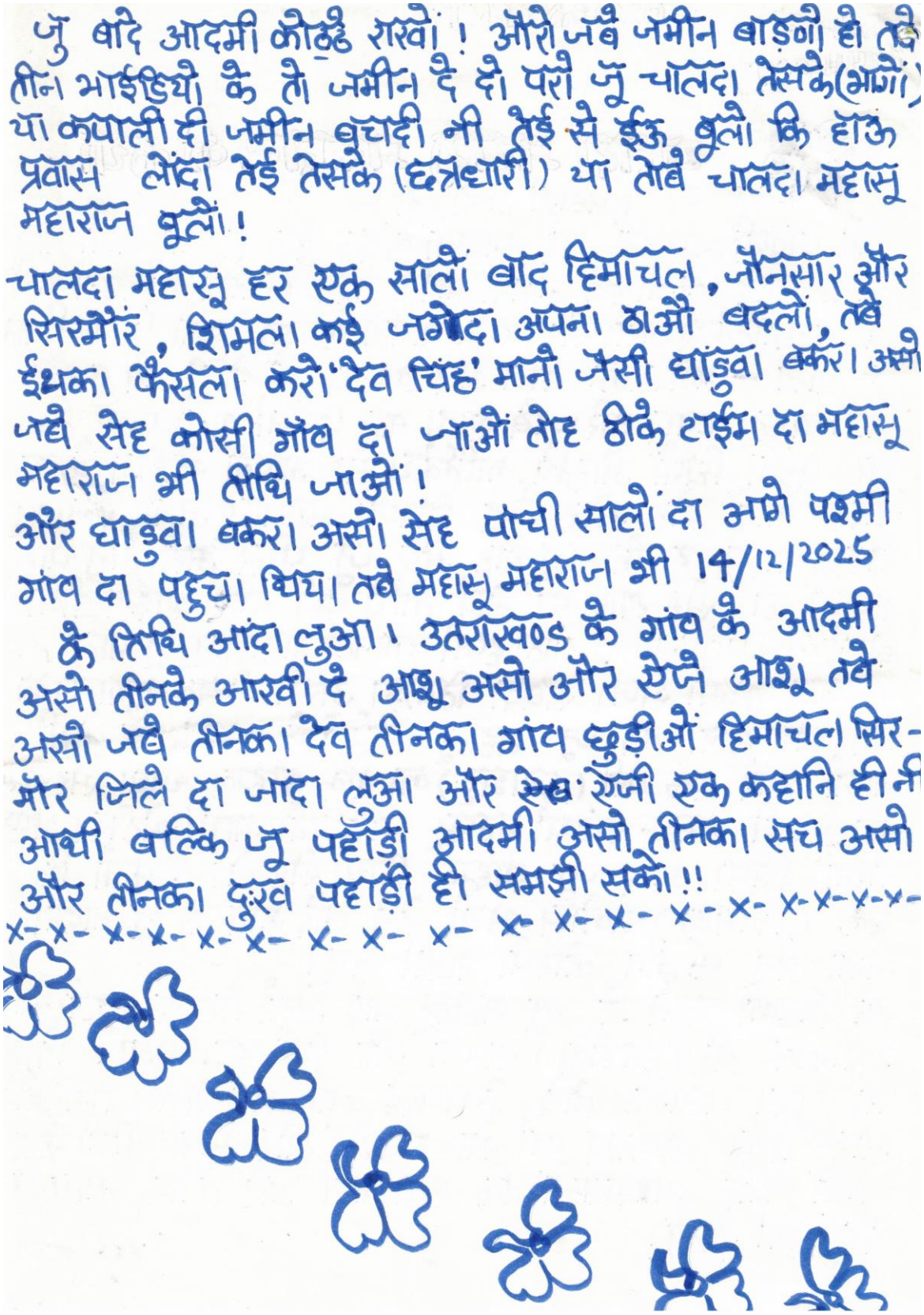

जु बादे आदमी कोठ्ठे राखो ! और जबै जमीन बाड़णी हो तै तीन भाईछियो के ते जमीन दे दो परो जु चालदा तेसके(भाणों) या कपाली दी जमीन बुचादी नी तेई से ईऊ बुलो कि हाऊ प्रवास लेंदा तेई तेसके (छत्रधारी) या तोबे चालदा महासु महाराज बुलो !

चालदा महासु हर एक सालों बाद हिमाचल, जौनसार और सिरमौर, शिमला काई जगोदा अपना ठाओ बदलो, तबे ईथका फैसला करो 'देव चिंह' मानो जैसी घांडुवा बकरा असो जबे सेह कोसी गाँव दा जाओं तोह ठीक टाईम दा महासु महाराज भी तीथि जाओं !

और घांडुवा बकरा असो सेह पाची सालों दा आगे पशमी गाव दा पहुचा थिया तबै महासु महाराज भी 14/12/2025 के तिथि आंदा लुओ। उतराखण्ड के गांव के आदमी असो तीनके आरवी दे आशू असो और ऐजे आशू तबे असो जबे तीनका देव तीनका गांव छुड़ीओं हिमाचल सिरमौर जिले दा जांदा लुआ और ऐजी एक कहानि ही नी आथी बल्कि जु पहाड़ी आदमी असो तीनका सच असो और तीनका दुख पहाड़ी ही समझी सको !!

Figure 4: Project II page 2

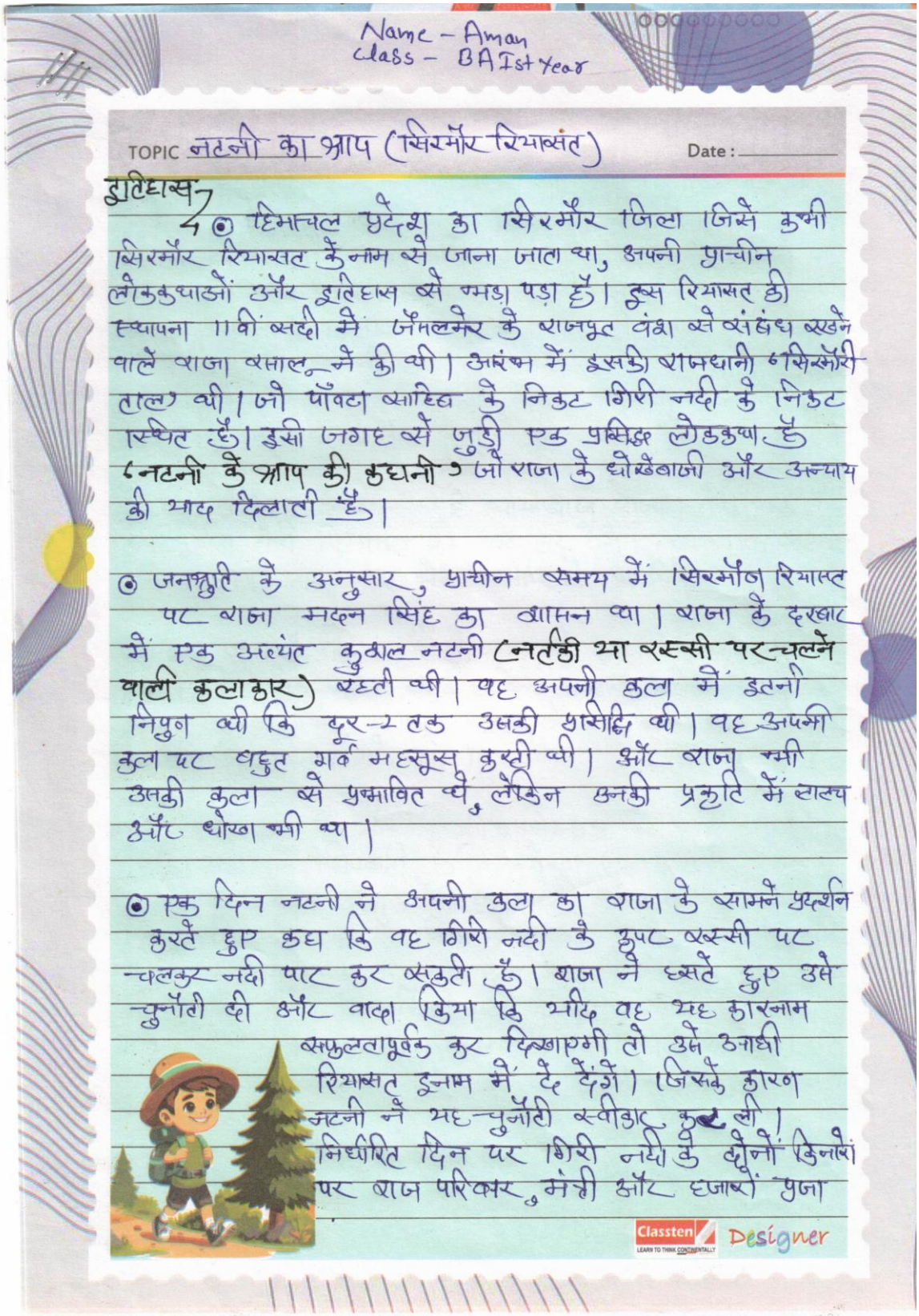

Name - Aman
Class - BA Ist Year

TOPIC नटनी का श्राप (सिरमौर रियासत) Date:

इतिहास

⊙ हिमाचल प्रदेश का सिरमौर जिला जिसे कभी सिरमौर रियासत के नाम से जाना जाता था, अपनी प्राचीन लोककथाओं और इतिहास से भरा पड़ा है। इस रियासत की स्थापना 11वीं सदी में जैसलमेर के राजपूत वंश से संबंध रखने वाले राजा रसाल ने की थी। आरंभ में इसकी राजधानी "सिरमौरी ताल" थी। जो पाँवटा साहिब के निकट गिरी नदी के निकट स्थित है। इसी जगह से जुड़ी एक प्रसिद्ध लोककथा है "नटनी के श्राप की कहानी" जो राजा के धोखेबाजी और अन्याय की याद दिलाती है।

⊙ जनश्रुति के अनुसार, प्राचीन समय में सिरमौर रियासत पर राजा मदन सिंह का शासन था। राजा के दरबार में एक अत्यंत कुशल नटनी (नर्तकी या रस्सी पर चलने वाली कलाकार) रहती थी। वह अपनी कला में इतनी निपुण थी कि दूर-2 तक उसकी प्रसिद्धि थी। वह अपनी कला पर बहुत गर्व महसूस करती थी। और राजा भी उसकी कला से प्रभावित थे, लेकिन उनकी प्रकृति में लालच और धोखा भी था।

⊙ एक दिन नटनी ने अपनी कला का राजा के सामने प्रदर्शन करते हुए कहा कि वह गिरी नदी के ऊपर रस्सी पर चलकर नदी पार कर सकती है। राजा ने हँसते हुए उसे चुनौती दी और वादा किया कि यदि वह यह कारनामा सफलतापूर्वक कर दिखाएगी तो उसे आधी रियासत इनाम में दे देंगे। जिसके कारण नटनी ने यह चुनौती स्वीकार कर ली। निर्धारित दिन पर गिरी नदी के दोनों किनारों पर राज परिवार, मंत्री और हजारों प्रजा

Classten Designer

Figure 5: Project III page 1

TOPIC _____ Date : _____

इकट्ठी हुई। नटनी ने रस्सी पर चलना शुरू किया और बड़ी कुशलता से नदी पार कर ली। प्रजा ने तालियाँ बजाकर उसकी प्रशंसा की। अब वापसी की बारी थी। नटनी रस्सी पर वापस चल रही थी कि राजा को अपनी आधा रियासत जाने का डर सताने लगा। लालच में आकर राजा ने अपने सैनिकों को इशारा किया और रस्सी काट दी गई।

⊙ नटनी गिरी नदी की तेज धारा में गिर गई और डूबने लगी। मरते-२ उसने क्रोध और दुःख से भरकर राजा और रियासत को श्राप दे दिया – "हे धोखेबाज राजा! तेरी यह कपटपूर्णता तेरी रियासत को नष्ट कर देगी। यह राज्य जलमग्न हो जाएगा और वंश खेल समाप्त हो जाएगी!"

⊙ कहा जाता है कि नटनी के श्राप से कुछ समय बाद गिरी नदी में भयंकर बाढ़ आई। सिरमौरी ताल पूरी तरह से जलमग्न हो गया, राजधानी नष्ट हो गई और राज परिवार के अधिकांश सदस्य मारे गए।

⊙ यह लोककथा सिरमौर की लोक संस्कृति में आज भी जीवित है। यह हमें सिखाती है कि धोखा, लालच और अन्याय का फल हमेशा बुरा होता है। नटनी की तरह साधारण लोग भी अन्याय के खिलाफ आवाज उठा सकते हैं, और प्रकृति कभी-२ उनका साथ देती है। सिरमौर का इतिहास दंतकथाओं और वास्तविक घटनाओं का मिश्रण है, जो हिमाचल की समृद्ध लोक परंपरा को दर्शाता है।

Figure 6: Project III page 2

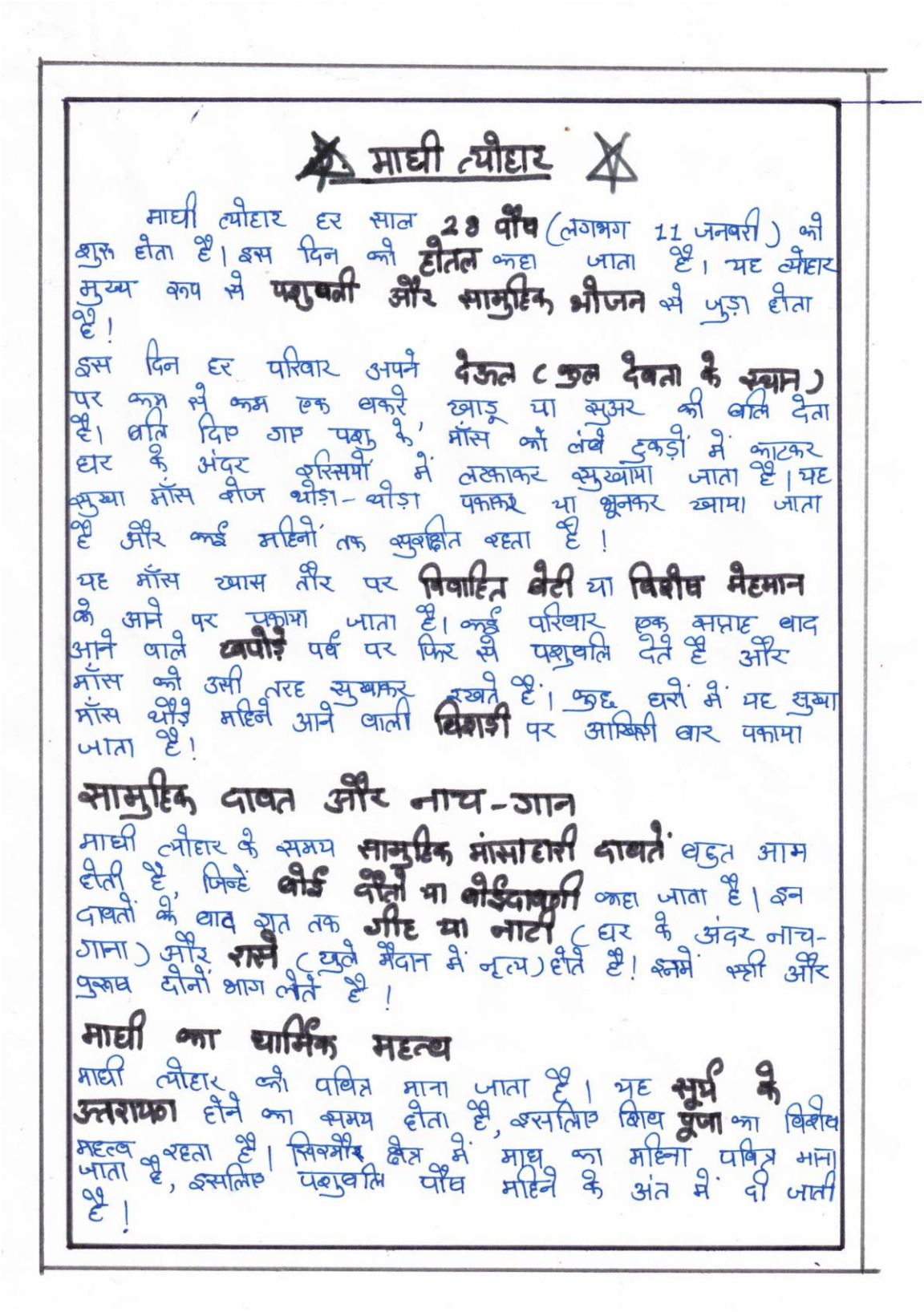

माघी त्योहार

माघी त्योहार हर साल **28 पौष** (लगभग 11 जनवरी) को शुरू होता है। इस दिन को **होतल** कहा जाता है। यह त्योहार मुख्य रूप से **पशुबली** और **सामुहिक भोजन** से जुड़ा होता है!

इस दिन हर परिवार अपने **देऊल (कुल देवता के स्थान)** पर कम से कम एक बकरे, खाडू या सुअर की बलि देता है। बलि दिए गए पशु के मॉस को लंबे टुकड़ों में काटकर घर के अंदर रस्सियों में लटकाकर सुखाया जाता है। यह सुखा मॉस बीज थोड़ा-थोड़ा पकाकर या भूनकर खाया जाता है और कई महिनों तक सुरक्षित रहता है!

यह मॉस खास तौर पर **विवाहित बेटी** या **विशेष मेहमान** के आने पर पकाया जाता है। कई परिवार एक सप्ताह बाद आने वाले **खपोड़** पर्व पर फिर से पशुबलि देते है और मॉस को उसी तरह सुखाकर रखते हैं। कुछ घरों में यह सुखा मॉस थोड़े महिने आने वाली **बिशड़ी** पर आखिरी बार पकाया जाता है!

सामुहिक दावत और नाच-गान

माघी त्योहार के समय **सामुहिक मांसाहारी दावतें** बहुत आम होती है, जिन्हें **बोई बौंतो या बोईदावणी** कहा जाता है। इन दावतों के बाद रात तक **गीह या नाटी** (घर के अंदर नाच-गाना) और **रासे** (खुले मैदान में नृत्य) होते है! इनमें स्त्री और पुरुष दोनों भाग लेते है!

माघी का धार्मिक महत्व

माघी त्योहार को पवित्र माना जाता है। यह **सूर्य के उत्तरायण** होने का समय होता है, इसलिए शिव **पूजा** का विशेष महत्व रहता है। सिरमौर क्षेत्र में माघ का महिना पवित्र माना जाता है, इसलिए पशुबलि पौष महिने के अंत में दी जाती है!

Figure 7: Project IV page 1

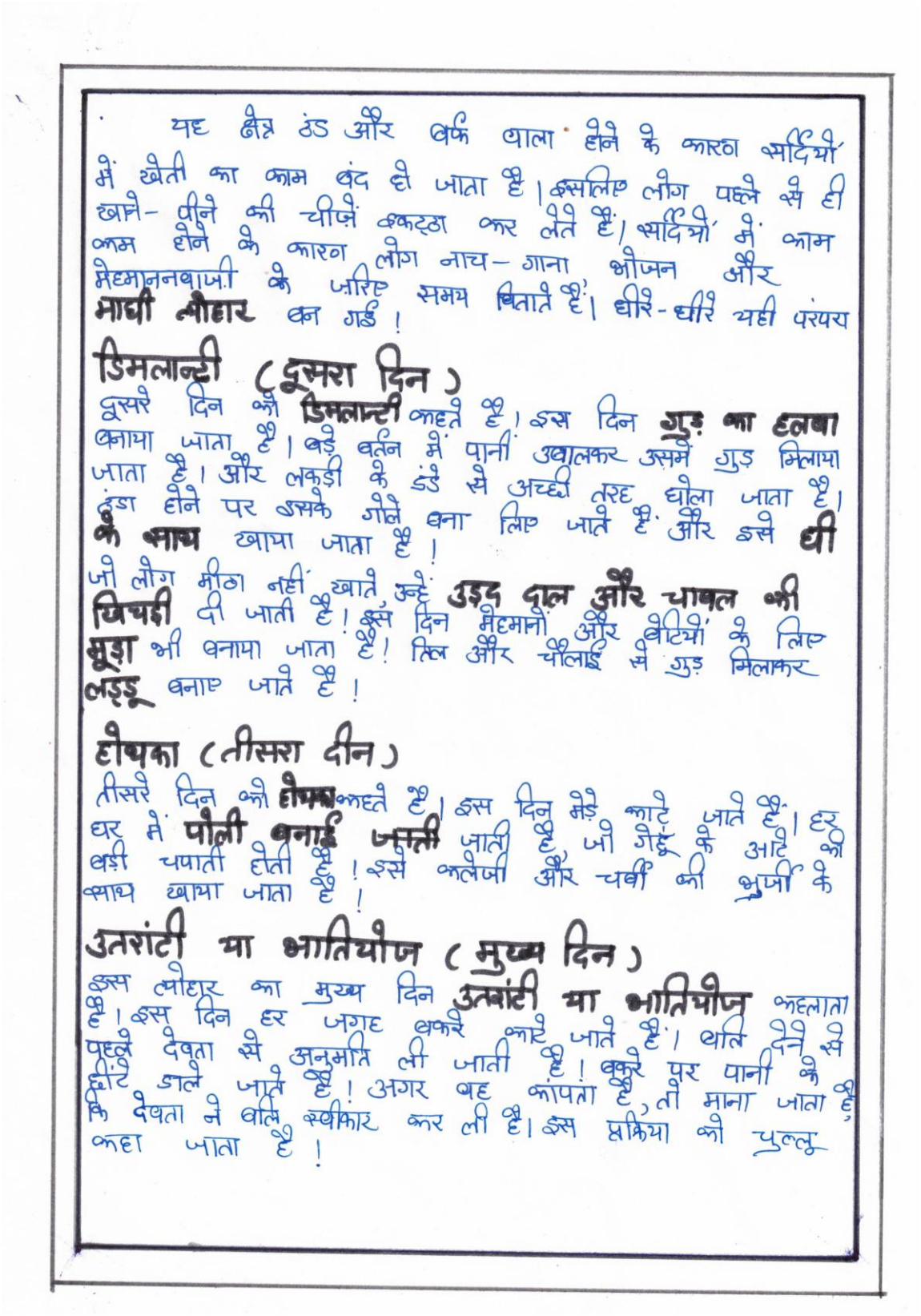

यह क्षेत्र ठंड और बर्फ वाला होने के कारण सर्दियों में खेती का काम बंद हो जाता है। इसलिए लोग पहले से ही खाने-पीने की चीज़ें इकट्ठा कर लेते हैं। सर्दियों में काम कम होने के कारण लोग नाच-गाना भोजन और मेहमाननवाज़ी के ज़रिए समय बिताते हैं। धीरे-धीरे यही परंपरा **माघी त्योहार** बन गई।

डिमलान्टी (दूसरा दिन)

दूसरे दिन को **डिमलान्टी** कहते हैं। इस दिन **गुड़ का हलवा** बनाया जाता है। बड़े बर्तन में पानी उबालकर उसमें गुड़ मिलाया जाता है। और लकड़ी के डंडे से अच्छी तरह घोला जाता है। ठंडा होने पर उसके गोले बना लिए जाते हैं और इसे **घी के साथ** खाया जाता है।

जो लोग मीठा नहीं खाते उन्हें **उड़द दाल और चावल की खिचड़ी** दी जाती है। इस दिन मेहमानों और बेटियों के लिए **मुड़ा** भी बनाया जाता है। तिल और चौलाई में गुड़ मिलाकर **लड्डू** बनाए जाते हैं।

होचका (तीसरा दीन)

तीसरे दिन को **होचका** कहते हैं। इस दिन मेड़े काटे जाते हैं। हर घर में **पोली बनाई जाती** जाती है, जो गेहूं के आटे की बड़ी चपाती होती है। इसे कलेजी और चर्बी की भुर्जी के साथ खाया जाता है।

उतरांटी या भातियोज (मुख्य दिन)

इस त्योहार का मुख्य दिन **उतरांटी या भातियोज** कहलाता है। इस दिन हर जगह बकरे काटे जाते हैं। बलि देने से पहले देवता से अनुमति ली जाती है। बकरे पर पानी के छींटे डाले जाते हैं। अगर वह कांपता है, तो माना जाता है कि देवता ने बलि स्वीकार कर ली है। इस प्रक्रिया को **पुल्लू** कहा जाता है।

Figure 8: Project IV page 2

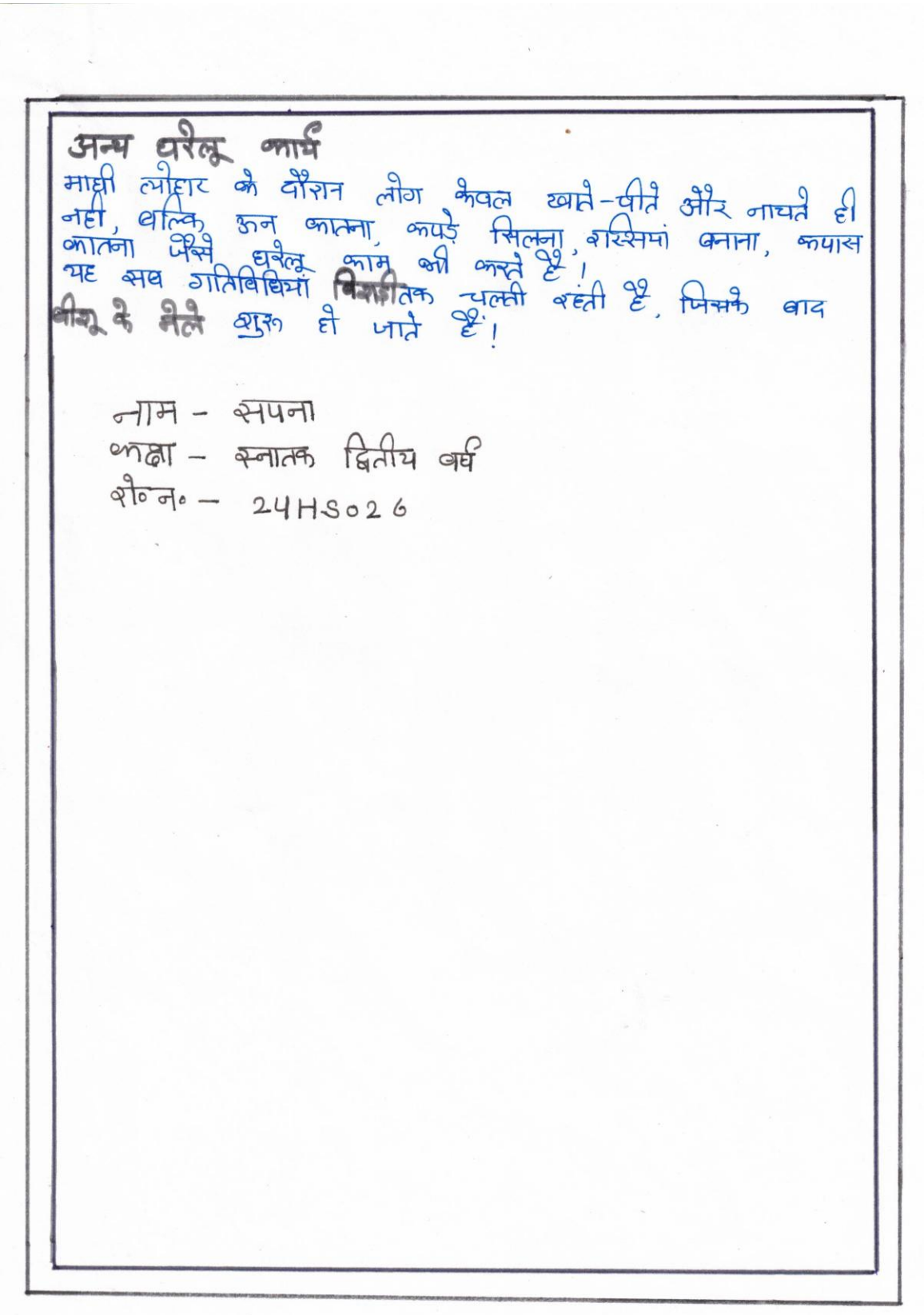

अन्य घरेलू कार्य

माघी त्योहार के दौरान लोग केवल खाते-पीते और नाचते ही नहीं, बल्कि ऊन कातना, कपड़े सिलना, रस्सियां बनाना, कपास कातना जैसे घरेलू काम भी करते हैं।
यह सब गतिविधियां बिशु तक चलती रहती हैं, जिसके बाद बीशू के मेले शुरु हो जाते हैं।

नाम - सपना
कक्षा - स्नातक द्वितीय वर्ष
रो० नं० - 24HS026

Figure 9: Project IV page 3

बूड़ा नृत्य

जब तक सेवा गायन पूरा होता है, तब तक पूरा गाँव जाग जाता है। इसके बाद लोग बूड़ा नृत्य देखने के लिए इकट्ठा हो जाते है। इस नृत्य मे भाग लेने वाले लोग सफेद रंग का चोला (चुलना) पहनते है, जिस पर रंग-बिरंगे फूल कढ़े होते है। सिर पर पगड़ी बांधी जाती है। इस वेश-भूषा में नर्तक बहुत सुंदर दिखाई देते है।

नृत्य शुरू होने से पहले दो लोग गीत गाते है और दो लोग उन्हें दोहराते है। साथ मे हुलक (वाद्य यंत्र) बजाया जाता है। इन गीतो का मुख्य उद्देश्य हार या हारुल होता है। लोग अपने पक्ष से जीत की जुड़ी हारुल सुनना पसंद करते है।

हारुल गीत

हारुल गीत पुराने समय के राजाओं और सामंतों की जीत-हार पर आधारित होते हैं। इनका ऐतिहासिक महत्व भी है क्योंकि ये उस समय की सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थिति को दिखाते है। ये गीत काफी लंबे होते हैं। जब बच्चे इन्हे सुनकर ऊब जाते है तो उनके मनोरंजन के लिए हास्य गीत गाए जाते है, जैसे चोड़ी, घुघती, जिकुला, कुकुआ और मुशिया।

नर्तकों को गांव के लोग अच्छा भोजन कराते है। अगर किसी घर मे कोई शुभ काम हुआ तो नर्तकों को पैसे भी दिए जाते है। आजकल बूड़ा नृत्य की परंपरा पहले की तुलना में कम हो गई है।

Figure 10: Project V page 1

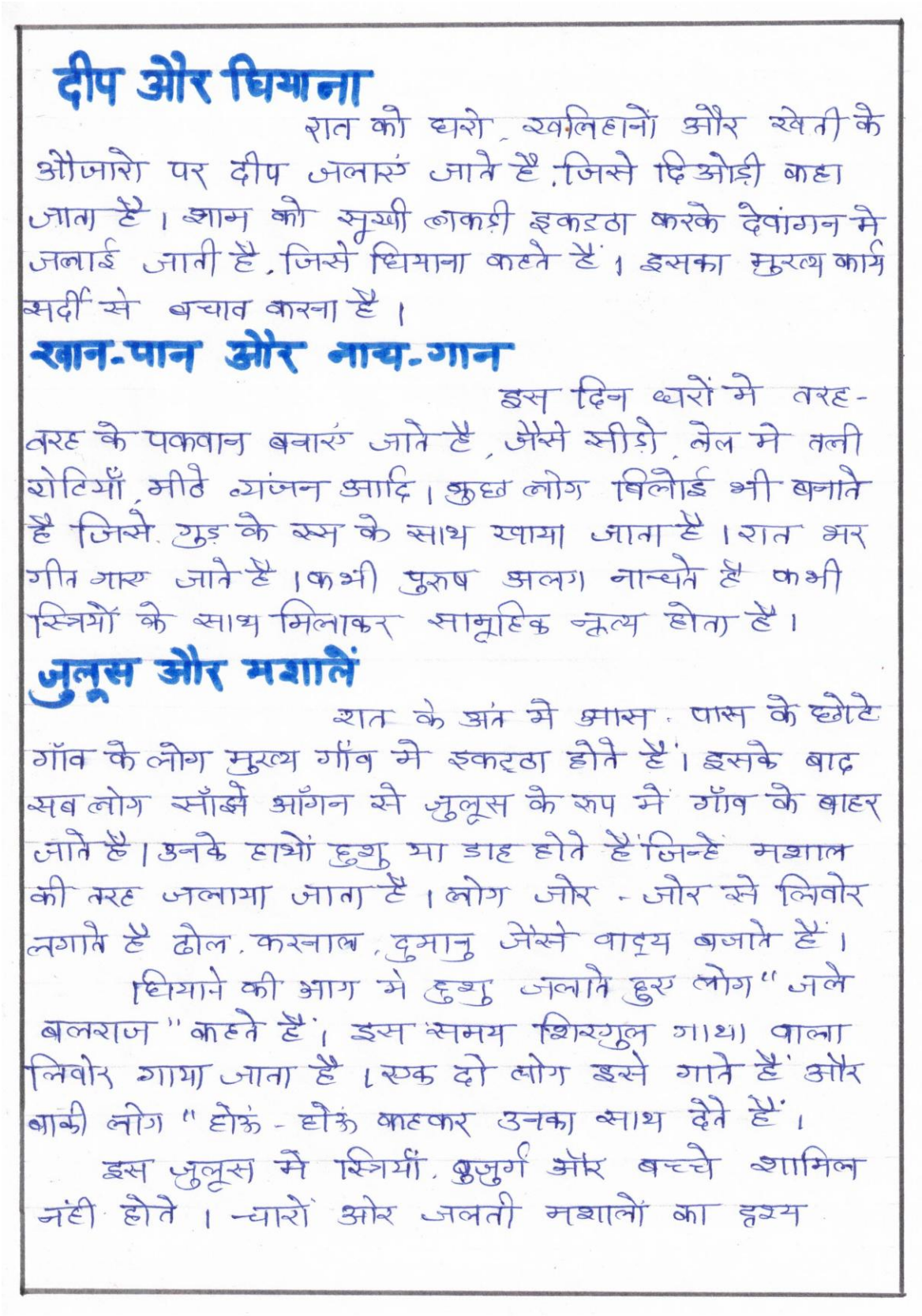

दीप और घियाना

रात को घरों, खलिहानों और खेतों के ओजारों पर दीप जलाए जाते हैं, जिसे दिओड़ी कहा जाता है। शाम को सूखी लकड़ी इकट्ठा करके देवांगन में जलाई जाती है, जिसे घियाना कहते हैं। इसका मुख्य कार्य सर्दी से बचाव करना है।

खान-पान और नाच-गान

इस दिन घरों में तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं, जैसे सीड़े, तेल में तली रोटियाँ, मीठे व्यंजन आदि। कुछ लोग बिलोई भी बनाते हैं जिसे गुड़ के रस के साथ खाया जाता है। रात भर गीत गाए जाते हैं। कभी पुरुष अलग नाचते हैं कभी स्त्रियों के साथ मिलाकर सामूहिक नृत्य होता है।

जुलूस और मशालें

रात के अंत में आस-पास के छोटे गाँव के लोग मुख्य गाँव में इकट्ठा होते हैं। इसके बाद सब लोग साँझे आँगन से जुलूस के रूप में गाँव के बाहर जाते हैं। उनके हाथों में दुघु या डाह होते हैं जिन्हें मशाल की तरह जलाया जाता है। लोग जोर-जोर से लिवोर लगाते हैं ढोल, करनाल, दुमानु जैसे वाद्य बजाते हैं।

घियाने की आग में दुघु जलाते हुए लोग "जले बलराज" कहते हैं। इस समय शिरगुल गाथा वाला लिवोर गाया जाता है। एक दो लोग इसे गाते हैं और बाकी लोग "होऊं-होऊं" कहकर उनका साथ देते हैं।

इस जुलूस में स्त्रियाँ, बुजुर्ग और बच्चे शामिल नहीं होते। चारों ओर जलती मशालों का दृश्य

Figure 11: Project V page 2

बहुत सुंदर लगता है। जब लोग नाच-गाकर थक जाते हैं तो अपने-अपने घर लौट जाते है। तब तक सुबह हो जाती है।

प्रात: कालीन गीत

सुबह के समय सोया, ईओल और पांडव गीत गाए जाते हैं। इसके साथ ही बूढ़ा नृत्य और उससे जुड़ा उत्सव समाप्त होता है।

Kasina Thakur
BA 2nd year
Roll No - 24HI001

Figure 12: Project V page 3

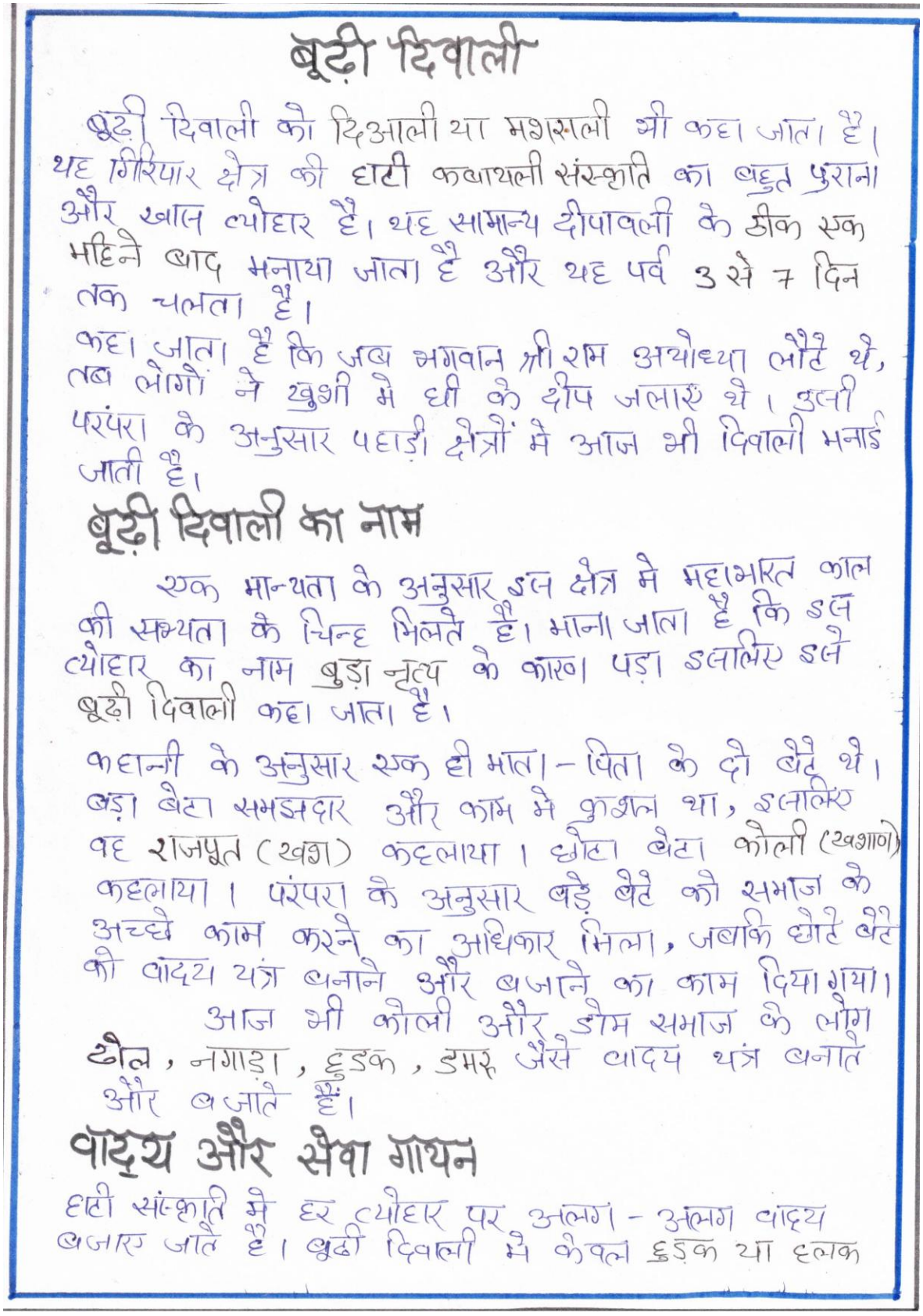

बूढ़ी दिवाली

बूढ़ी दिवाली को दिआली या मशरली भी कहा जाता है। यह गिरिपार क्षेत्र की हाटी कबायली संस्कृति का बहुत पुराना और खास त्योहार है। यह सामान्य दीपावली के ठीक एक महिने बाद मनाया जाता है और यह पर्व 3 से 7 दिन तक चलता है।

कहा जाता है कि जब भगवान श्री राम अयोध्या लौटे थे, तब लोगों ने खुशी मे घी के दीप जलाए थे। इसी परंपरा के अनुसार पहाड़ी क्षेत्रों मे आज भी दिवाली मनाई जाती है।

बूढ़ी दिवाली का नाम

एक मान्यता के अनुसार इस क्षेत्र मे महाभारत काल की सभ्यता के चिन्ह मिलते है। माना जाता है कि इस त्योहार का नाम बुड़ा नृत्य के कारण पड़ा इसलिए इसे बूढ़ी दिवाली कहा जाता है।

कहानी के अनुसार एक ही मात। - पिता के दो बेटे थे। बड़ा बेटा समझदार और काम मे कुशल था, इसलिए वह राजपूत (खश) कहलाया। छोटा बेटा कोली (खशाण) कहलाया। परंपरा के अनुसार बड़े बेटे को समाज के अच्छे काम करने का अधिकार मिला, जबकि छोटे बेटे को वादय यंत्र बनाने और बजाने का काम दिया गया।

आज भी कोली और डोम समाज के लोग ढोल, नगाड़ा, हुडक, डमरू जैसे वादय यंत्र बनाते और बजाते है।

वादय और सेवा गायन

हाटी संस्कृति मे हर त्योहार पर अलग - अलग वादय बजाए जाते है। बूढ़ी दिवाली मे केवल हुड़क या हलक

Figure 13: Project VI page 1

बजाया जाता है। इस समय बुडो या बुड़ियाच नाम का समूह गांव के बाहर मुख्य द्वार (जांघी) पर जाकर ग्राम देवता की पूजा करता है। इसे **सेवा** गायन कहा जाता है।

अमावस्या का दिन

दिवाली के दूसरे दिन अमावस्या होती है। इस दिन कोली और डोम समाज के लोग सफेद कपड़े पहनते हैं, जिन पर रंग-बिरंगे फूल कढ़े होते हैं। इन कपड़ों को चोला, चुलटू या तुलना कहा जाता है। वे बुड़ा नृत्य करते हैं और हुड़क बजाते हैं।

सुबह कोली लोग गांव के सबसे सम्मानित व्यक्ति (स्वामी या ठाकुर) के घर जाकर सेवा गीत गाते हैं और उन्हें अखरोट देते हैं। बदले में उन्हें मूड़ा पैसे या उपहार मिलते हैं। इस समय हार या हारूल गीत गाए जाते हैं। शाम को घरों, खलिहानों और खेती के औजारों पर दीप जलाए जाते हैं, जिसे दुओड़ी कहते हैं। गांव के सामूहिक आंगन में सूखी लकड़ी जलाकर धियाना किया जाता है।

तीसरा दिन - पड़वा या भिउरी

तीसरे दिन को पड़वा या भिउरी कहा जाता है। इस दिन देवता की पूजा की जाती है। बैलों को अनाज खिलाया जाता है और उनके सींगों में तेल लगाया जाता है।

इस दिन घरों में कई तरह के पकवान बनाए जाते हैं जैसे मूड़ा, साकुली, सीडों गुलगुले आदि। इस समय बेटियाँ अपने मायके आती हैं और उन्हें दिवाली का हिस्सा दिया जाता है बहुत भावुक होता है।

बलराज और समापन

इसके बाद बलराज जलाया जाता है। मान्यता है कि बलिराजा के कारण सभी देवता पाताल चले गए थे, लेकिन बलराज जलाने के बाद वे फिर धरती पर लौट आए। इसी खुशी में देवताओं की पूजा की जाती है।

Figure 14: Project VI page 2

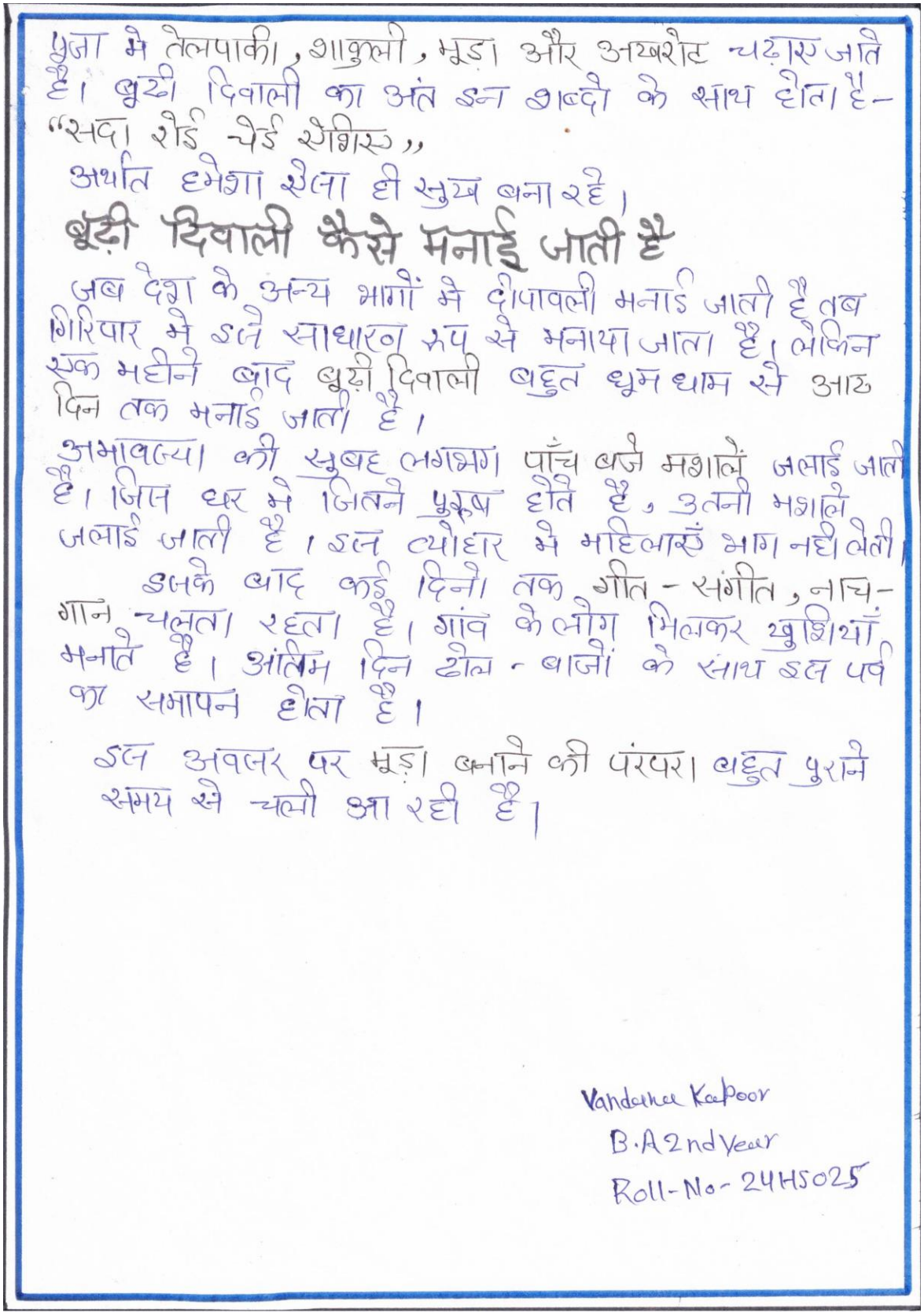

पूजा मे तेलपाकी, शाकुली, मूड़ा और अखरोट चढ़ाए जाते है। बूढ़ी दिवाली का अंत इन शब्दो के साथ होता है-
"सदा रोई चेई रोशिए"
अर्थात हमेशा ऐसा ही सुख बना रहे।

बूढ़ी दिवाली कैसे मनाई जाती है

जब देश के अन्य भागों मे दीपावली मनाई जाती है तब गिरिपार मे इसे साधारण रूप से मनाया जाता है। लेकिन एक महीने बाद बूढ़ी दिवाली बहुत धूम धाम से आठ दिन तक मनाई जाती है।

अमावस्या की सुबह लगभग पाँच बजे मशालें जलाई जाती है। जिस घर मे जितने पुरुष होते है, उतनी मशालें जलाई जाती है। इस त्योहार मे महिलाएँ भाग नही लेती।

इसके बाद कई दिनो तक गीत-संगीत, नाच-गान चलता रहता है। गांव के लोग मिलकर खुशियाँ मनाते है। अंतिम दिन ढोल-बाजों के साथ इस पर्व का समापन होता है।

इस अवसर पर मूड़ा बनाने की परंपरा बहुत पुराने समय से चली आ रही है।

Vandana Kapoor
B.A 2nd Year
Roll-No- 24HS025

Figure 15: Project VI page 3

ii. Surveys

Departments encourage students to undertake field-based surveys related to their respective disciplines. These surveys enable students to engage with real-life socio-economic, cultural, and environmental issues, particularly relevant to the rural and remote context of the region. Survey-based activities enhance observational skills, data interpretation, and practical understanding of theoretical concepts.

Copies of survey report and questionnaire has been shown below.

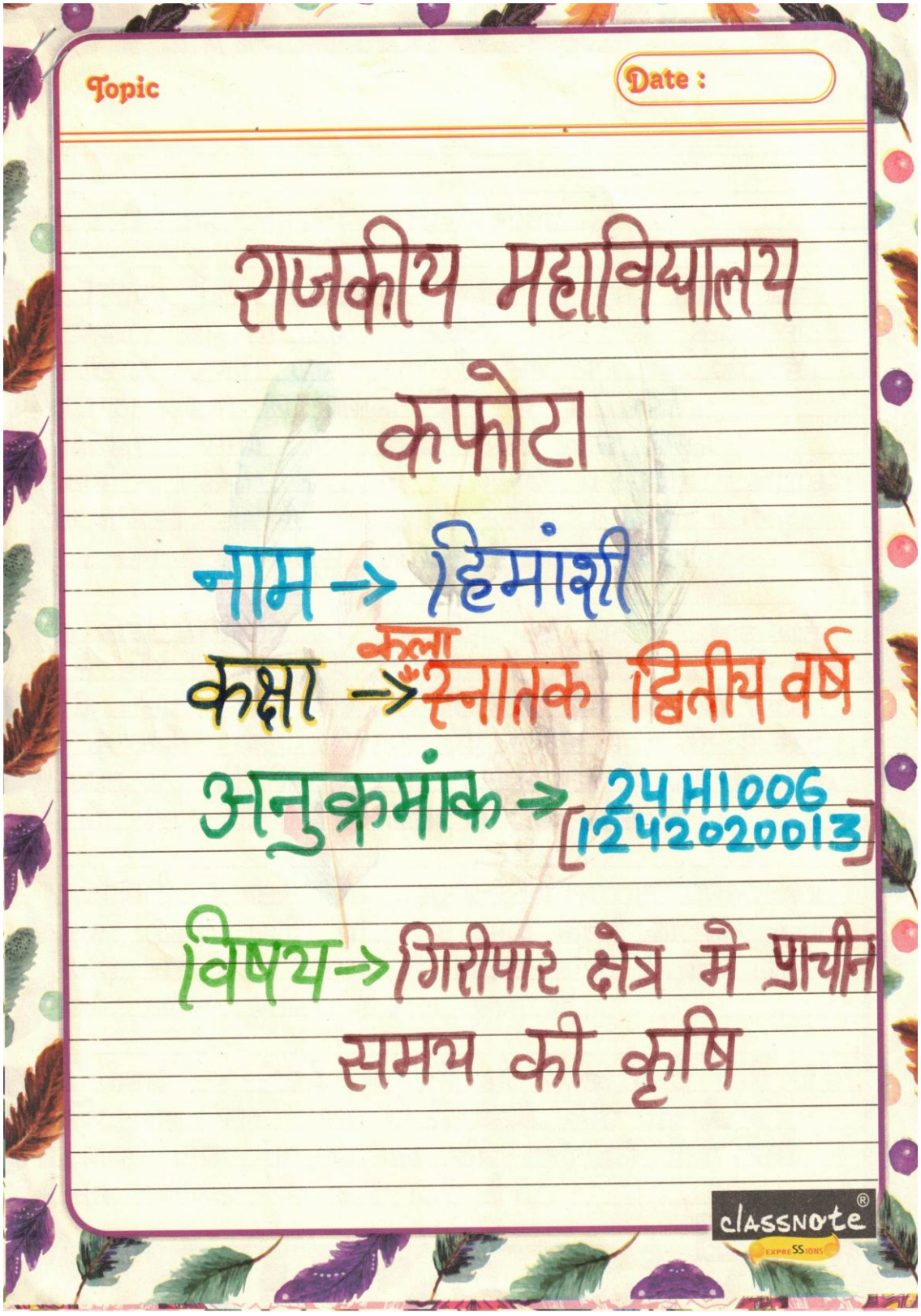

Figure 16: Survey report I page 1

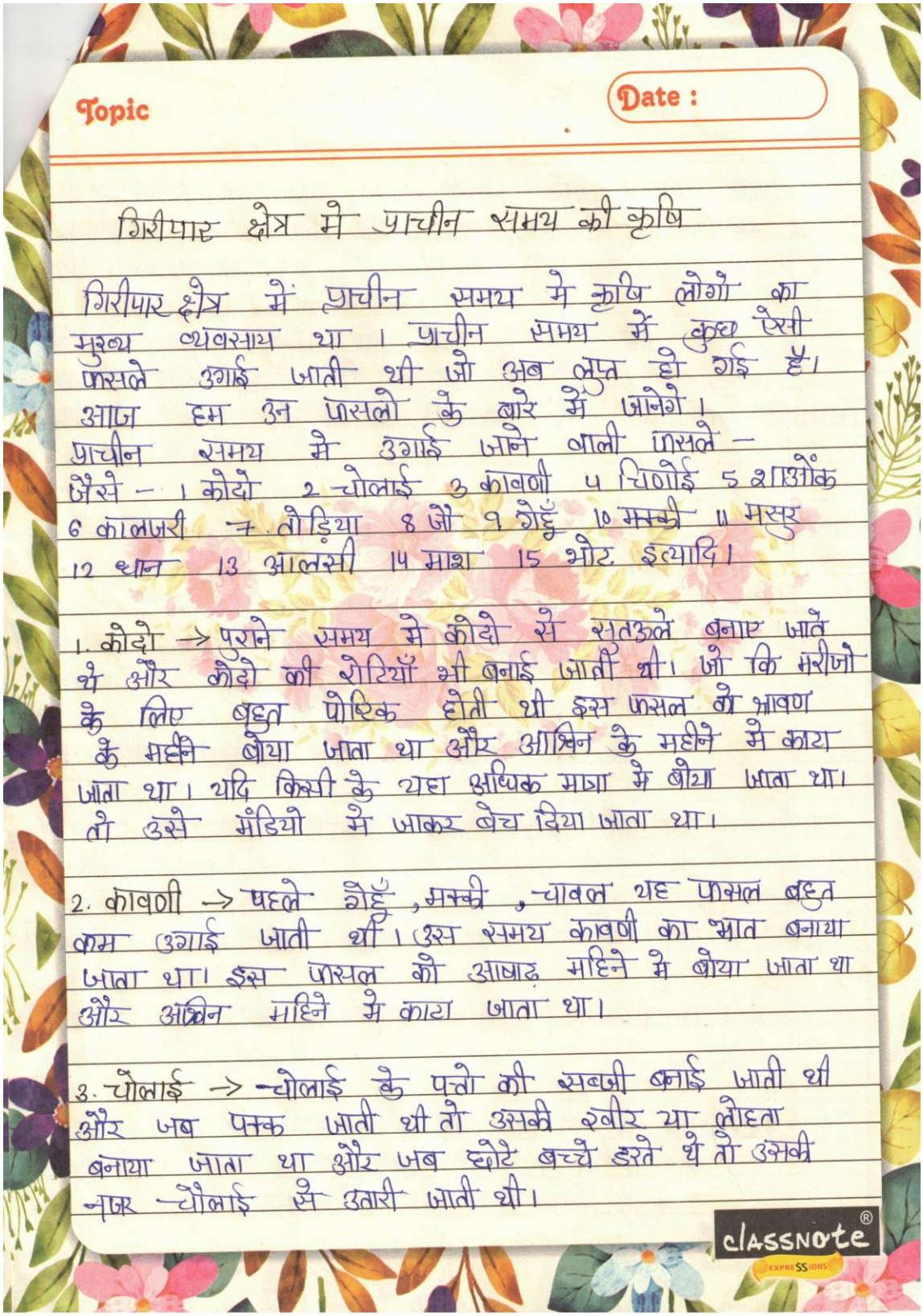

Topic

Date :

गिरीपार क्षेत्र मे प्राचीन समय की कृषि

गिरीपार क्षेत्र में प्राचीन समय मे कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय था। प्राचीन समय में कुछ ऐसी फसले उगाई जाती थी जो अब लुप्त हो गई है। आज हम उन फसलो के बारे मे जानेगे।
प्राचीन समय मे उगाई जाने वाली फसले –
जैसे – 1 कोदो 2 चोलाई 3 कावणी 4 चिणोई 5 राओंक 6 कालजरी 7 तोड़िया 8 जो 9 गेहूँ 10 मक्की 11 मसुर 12 धान 13 आलसी 14 माश 15 भोट इत्यादि।

1. कोदो → पुराने समय मे कोदो से सतऊले बनाए जाते थे और कोदो की रोटियाँ भी बनाई जाती थी। जो कि मरीजो के लिए बहुत पोष्टिक होती थी इस फसल को भाद्रपद के महीने बोया जाता था और आश्विन के महीने मे काटा जाता था। यदि किसी के यहा अधिक मात्रा मे बोया जाता था। तो उसे मंडियो मे जाकर बेच दिया जाता था।

2. कावणी → पहले गेहूँ, मक्की, चावल यह फसल बहुत कम उगाई जाती थी। उस समय कावणी का भात बनाया जाता था। इस फसल को आषाढ़ महिने मे बोया जाता था और आश्विन महिने मे काटा जाता था।

3. चौलाई → चोलाई के पत्तो की सब्जी बनाई जाती थी और जब पक्क जाती थी तो उसकी खीर या लोहटा बनाया जाता था और जब छोटे बच्चे डरते थे तो उसकी नजर चौलाई से उतारी जाती थी।

classnote® EXPRESSIONS

Figure 17: Survey report I page 2

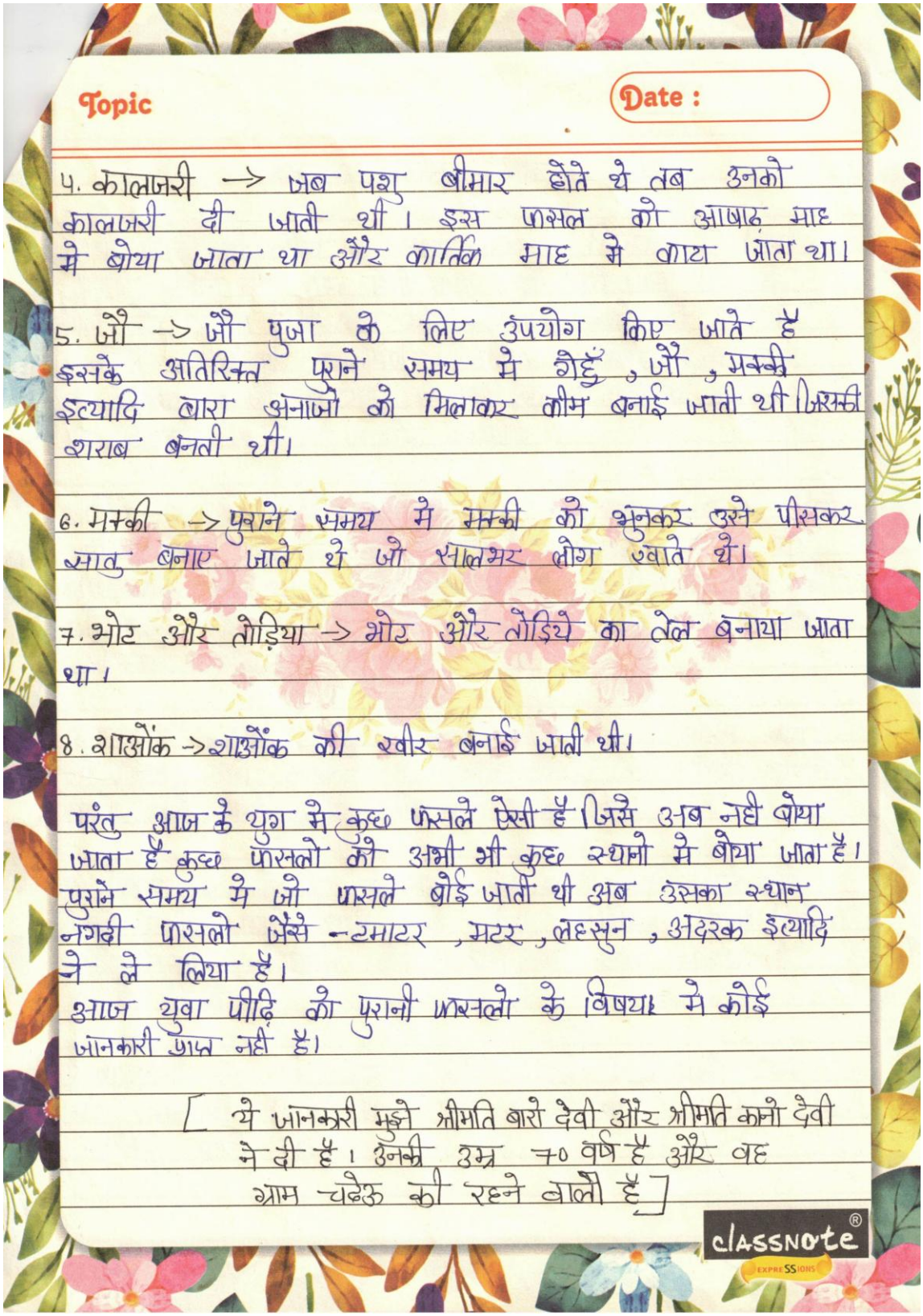

Topic

Date :

4. कालजरी → जब पशु बीमार होते थे तब उनको कालजरी दी जाती थी। इस फसल को आषाढ़ माह मे बोया जाता था और कार्तिक माह मे काटा जाता था।

5. जौ → जौ पुजा के लिए उपयोग किए जाते है इसके अतिरिक्त पुराने समय मे गेहूँ, जौ, मक्की इत्यादि बारा अनाजो को मिलाकर कीम बनाई जाती थी जिसकी शराब बनती थी।

6. मक्की → पुराने समय मे मक्की को भुनकर उसे पीसकर सातु बनाए जाते थे जो सालभर लोग खाते थे।

7. भोट और तोड़िया → भोट और तोड़िये का तेल बनाया जाता था।

8. शाओंक → शाओंक की खीर बनाई जाती थी।

परंतु आज के युग मे कुछ फसले ऐसी है जिसे अब नही बोया जाता है कुछ फसलो को अभी भी कुछ स्थानो मे बोया जाता है। पुराने समय मे जो फसले बोई जाती थी अब उसका स्थान नगदी फसलो जैसे - टमाटर, मटर, लहसुन, अदरक इत्यादि ने ले लिया है।
आज युवा पीढ़ि को पुरानी फसलो के विषय मे कोई जानकारी प्राप्त नही है।

[ये जानकारी मुझे श्रीमति बारो देवी और श्रीमति कनो देवी ने दी है। उनकी उम्र 70 वर्ष है और वह ग्राम चढेऊ की रहने वाली है]

classnote® EXPRESSIONS

Figure 18: Survey report I page 3

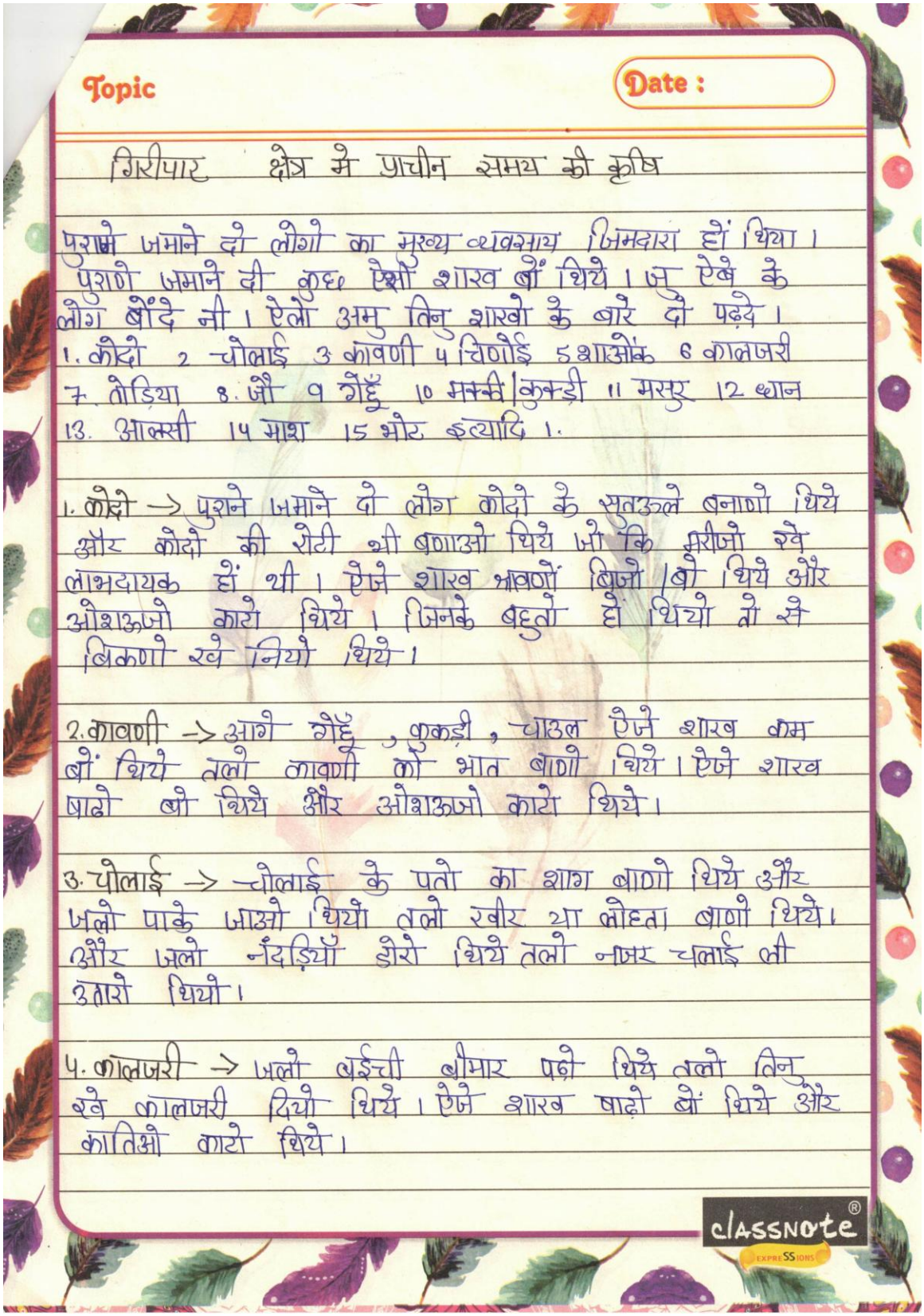

Topic

Date :

गिरीपार क्षेत्र मे प्राचीन समय की कृषि

पुराणे जमाने दो लोगो का मुख्य व्यवसाय जिमदारा हों थिया। पुराणे जमाने दी कुछ ऐसी शारव बों थिये। जु ऐबे के लोग बोंदे नी। ऐलो अमु तिनु शारबो के बारे दो पढ़दे।

1. कोदो 2 चोलाई 3 कावणी 4 चिणोई 5 शाओक 6 कालजरी
7. तोड़िया 8. जौ 9 गेहूँ 10 मक्की/कुकड़ी 11 मसूर 12 धान
13. आल्सी 14 माश 15 भोर इत्यादि।

1. कोदो -> पुराने जमाने दो लोग कोदो के सतऊले बणाओ थिये और कोदो की रोटी भी बणाओ थिये जो कि शरीरो रवे लाभदायक हों थी। ऐजे शारव भावणों बिजो बो थिये और ओशऊजो काटे थिये। जिनके बहुतो हो थियो तो से बिकणो रवे नियो थिये।

2. कावणी -> आगे गेहूँ, कुकड़ी, चाउल ऐजे शारव कम बों थिये तलो कावणी को भात बाणो थिये। ऐजे शारव षाढ़ो बो थिये और ओशाऊजो काटे थिये।

3. चोलाई -> चोलाई के पतो का शाग बाणो थिये और जलो पाके जाओ थियो तलो खीर था लोहता बाणो थिये। और जलो नंदड़ियाँ डोरो थिये तलो नजर चलाई भी उतारो थियो।

4. कालजरी -> जलो बेईची बीमार पड़ो थिये तलो तिनु रवे कालजरी दियो थिये। ऐजे शारव षाढ़ो बों थिये और कातिओ काटे थिये।

classnote

Figure 19: Survey report I page 4

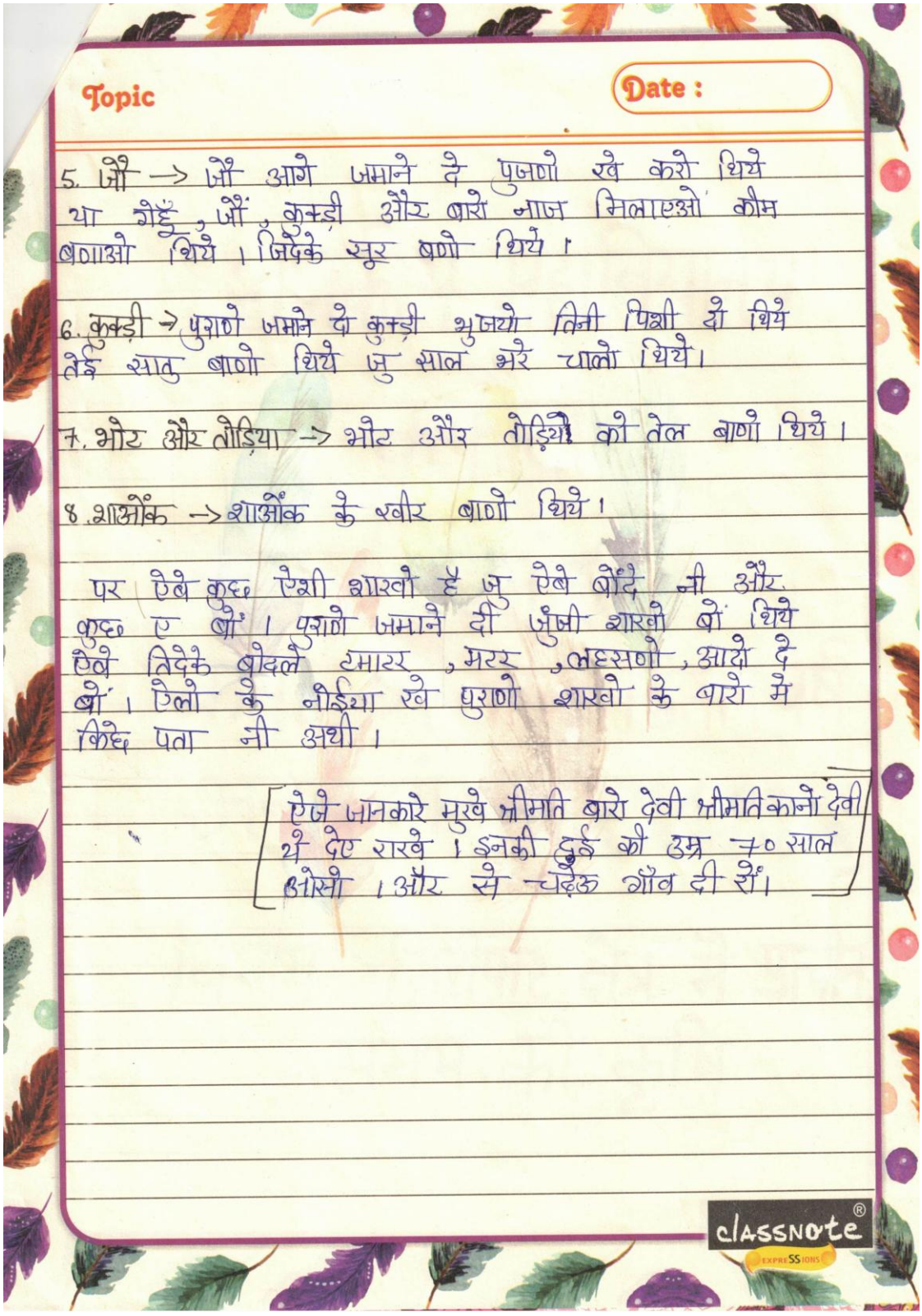

Topic

Date :

5. जौ → जौ आगे जमाने दे पुजणो खे करो थिये
या गेहूं, जौं, कुन्ड़ी और बारो नाज मिलाएओ कौम
बणाओ थिये। जिदेके सुर बणो थिये।

6. कुकड़ी → पुराणे जमाने दो कुन्ड़ी भुजयो तिनी पिशी दो थिये
तेई सातु बाणो थिये जु साल भरे चालो थिये।

7. भोट और तोड़िया → भोट और तोड़िये को तेल बाणो थिये।

8. शाओंक → शाओंक के खीर बाणो थिये।

पर ऐबे कुछ ऐशी शाखो है जु ऐबे बोंदे नी और
कुछ ए बों। पुराणे जमाने दी जुंजी शाखो बों थिये
ऐबे तिदेके बोदले एमारर, मरर, लहसणो, आदो दे
बों। ऐलो के नोईया खे पुराणो शाखो के बारो मे
किछ पता नी अथी।

ऐजे जानकारे मुखे श्रीमति बारो देवी श्रीमति कानो देवी
थे देए राखे। इनकी दुई को उम्र 70 साल
ओसो। और से चढेऊ गाँव दी रैं।

classnote

Figure 20: Survey report I page 5

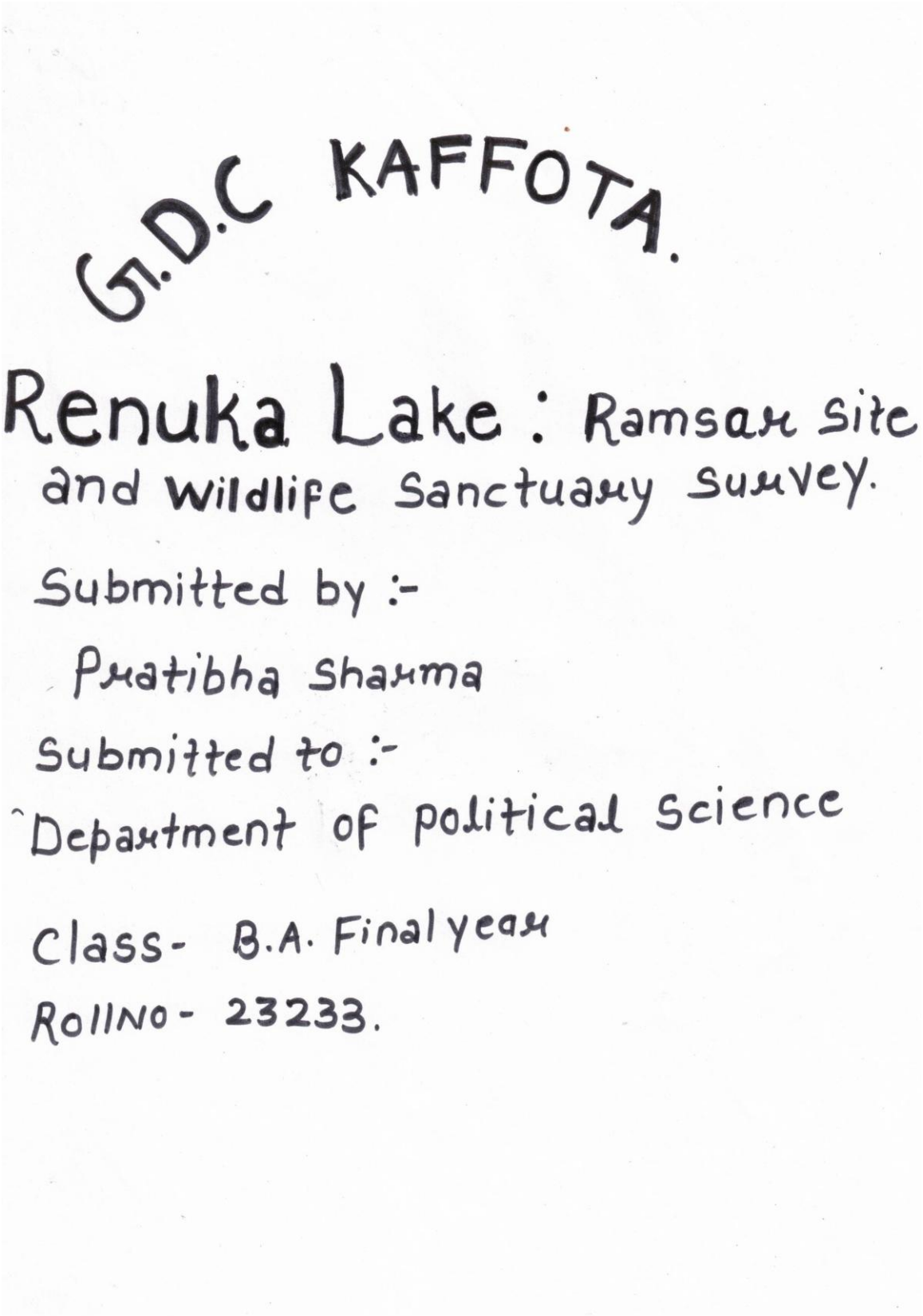

G.D.C KAFFOTA.

Renuka Lake : Ramsar Site and Wildlife Sanctuary Survey.

Submitted by :-

Pratibha Sharma

Submitted to :-

Department of political Science

Class- B.A. Final year

RollNo- 23233.

Figure 21: Survey report II Page 1

रेणुका झील: रामसर स्थल एवं वन्यजीव अभयारण्य

हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले मे स्थित रमणीय रेणुका झील को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रेणुका आर्द्रभूमि (रामसर स्थल) के रूप मे मान्यता प्राप्त है। यह एक विशिष्ट उपलब्धि है। यह एक विशिष्ट उपलब्धि है, क्योंकि भारत मे कुल 86 रामसर स्थल हैं। जिनमे से 3 हिमाचल प्रदेश मे स्थित हैं। हिमाचल प्रदेश के अन्य दो रामसर स्थल पौंग डैम झील तथा चन्द्रताल झील हैं। विश्व स्तर पर कुल 2,293 रामसर स्थल चिन्हित किए गए हैं।

हिमाचल प्रदेश मे कुल 92 आर्द्रभूमियां हैं, जिसमें 85 प्राकृतिक तथा 7 मानव-निर्मित हैं। रेणुका झील राज्य की सबसे बड़ी प्राकृतिक झील है, जिसमे 8 नवंबर 2005 को रामसर स्थल संख्या 1571 के रूप मे सूचीबद्ध किया गया।

रामसर कन्वेंशन

आर्द्रभूमियां के संरक्षण एवं उनके विवेकपूर्ण उपयोग के उद्देश्य से रामसर कन्वेंशन एक अंतर सरकारी संधि है। इस संधि पर 2 फरवरी 1971 को ईरान के रामसर शहर मे हस्ताक्षर किए गए थे तथा यह 1 दिसंबर 1975 को प्रभावी हुई। भारत मे यह संधि 1 फरवरी 1982 से लागू है

भौगोलिक स्थिति एवं भौतिक स्वरूप

रेणुका आर्द्रभूमि दो समानांतर खड़ी पहाड़ियां के बीच एक संकरी घाटी मे स्थित है। झील से एक छोटा निकास पास स्थित परशुराम ताल की ओर जाता है, जो आगे चलकर एक छोटी धारा के माध्यम से गिरि नदी मिल जाता है।

यह झील टेक्टोनिक उत्पत्ति की मानी जाती है तथा गिरि नदी के पुराने प्रवाह मार्ग मे बनी है झील समुद्र तल से लगभग 660 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इसकी परिधि 3214 मीटर, क्षेत्रफल लगभग 20 हेक्टेयर तथा अधिकतम गहराई 13 मीटर हैं। झील के चारों ओर मंदिरो की एक श्रृंखला एवं परिक्रमा पथ निर्मित है।

पौराणिक एवं धार्मिक महत्व

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार स्त्री के मुखाकृति सदृश आकृति के कारण रेणुका झील को देवी रेणुका का स्वरूप माना जाता है। देवी रेणुका, महर्षि जमदग्नि की पत्नी तथा भगवान विष्णु के दस अवतारो मे से एक भगवान परशुराम की माता थी।

Figure 22: Survey report II Page 2

एक कथा के अनुसार, जब सहस्त्रार्जुन ने ऋषि जमदग्नि की हत्या कर देवी रेणुका का अपहरण करना चाहा, तब उन्होंने जल में प्रवेश कर लिया। देवताओं द्वारा उन्हे पुनः जीवनदान दिया गया और यही उनका प्रतीक मानी जाती है।

दूसरी कथा के अनुसार, पिता की आज्ञा पर परशुराम द्वारा माता के बलिदान के पश्चात इसी स्थान पर झील का निर्माण हुआ। झील के नीचे स्थित परशुराम ताल को भगवान परशुराम का निवास स्थल माना जाता है।

मान्यता है कि देवप्रबोधिनी एकादशी के दिन देवी रेणुका झील से बाहर आकर अपने पुत्र से मिलती है। इसी अवसर पर प्रतिवर्ष रेणुका जी अन्तराष्ट्रीय मेला आयोजित किय जाता है।

रेणुका जी वन्यजीव अभ्यारण

रेणुका आर्द्रभूमि के चारों और लगभग 402 हेक्टेयर क्षेत्र को रेणुका जी वन्यजीव अभ्यारण घोषित किया गया है। जो झील का प्रमुख जलग्रहण क्षेत्र भी है। इसके अतिरिक्त, अभयारण की सीमा से 0.4 K.M से 2.15 K.M तक का का क्षेत्र इको-सेंसिटिव जोन घोषित है।

जैव विविधता

रेणुका आर्द्रभूमि जैव विविधता की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है। भारतीय प्राणी सर्वेक्षण के अनुसार यहाँ कुल 443 प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमे 107 पक्षी प्रजातियां 96 तितली प्रजातियाँ तथा अनेक स्तनधारी जीव शामिल है। रेणुका झील का स्थिर जल पारिस्थितिकी तंत्र (लेंटिक इकोसिस्टम) 19 मछली प्रजातियों का आवास है। यहाँ एक मिनी चिड़ियाघर एवं लायन सफारी भी स्थापित है।

जल विज्ञान एवं पर्यावरणीय समस्याएँ

झील का जल मुख्यतः आन्तरिक झरनो से प्राप्त होता है, जो भ्रंशो एक दरारो द्वारा नियंत्रित है। झील का जलग्रहण क्षेत्र 22 छोटे बड़े नालो से प्रभावित है, जिनकी माध्यम से वर्षा ऋतु मे भारी मात्रा में जल, गाद एवं मलबा झील में प्रवेश करता है। इससे यूट्रोफिकेशन, आवास क्षरण एवं पारिस्थितिक असंतुलन की समस्या उत्पन्न हो रही है इन समस्याओं के समाधान हेतु मृदा संरक्षण एवं जैव अभियांत्रिकी उपाय आवश्यक है केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2012-17 के दौरान प्रबन्ध योजनाओ के लिए 1.70 करोड रुपये स्वीकृत किए गए थे।

रेणुका बाँध परियोजना

हाल के वर्षों में गिरी नदी पर प्रस्तावित रेणुका बाँध परियोजना, जिसके माध्यम से दिल्ली को पेयजल उपलब्ध कराया जाना प्रस्तावित है, राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बनी हुई है। हालांकि, इस परियोजना से रेणुका आर्द्रभूमि एवं वन्यजीव अभ्यारण पर पड़ने वाले सम्भावित [illegible] व्यक्त की जा रही है।

Figure 23: Survey report II page 3

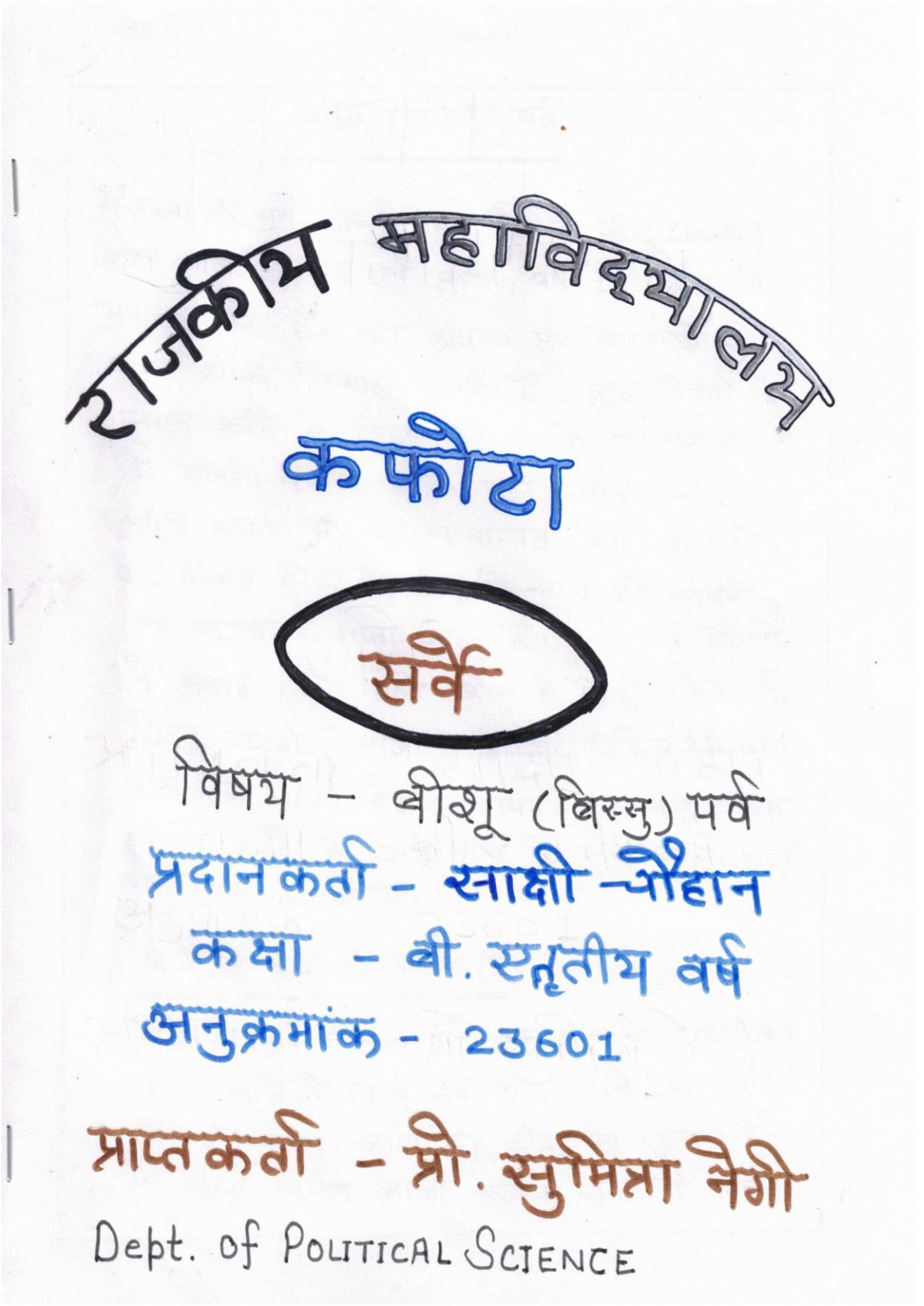

Figure 24: Survey report III page 1

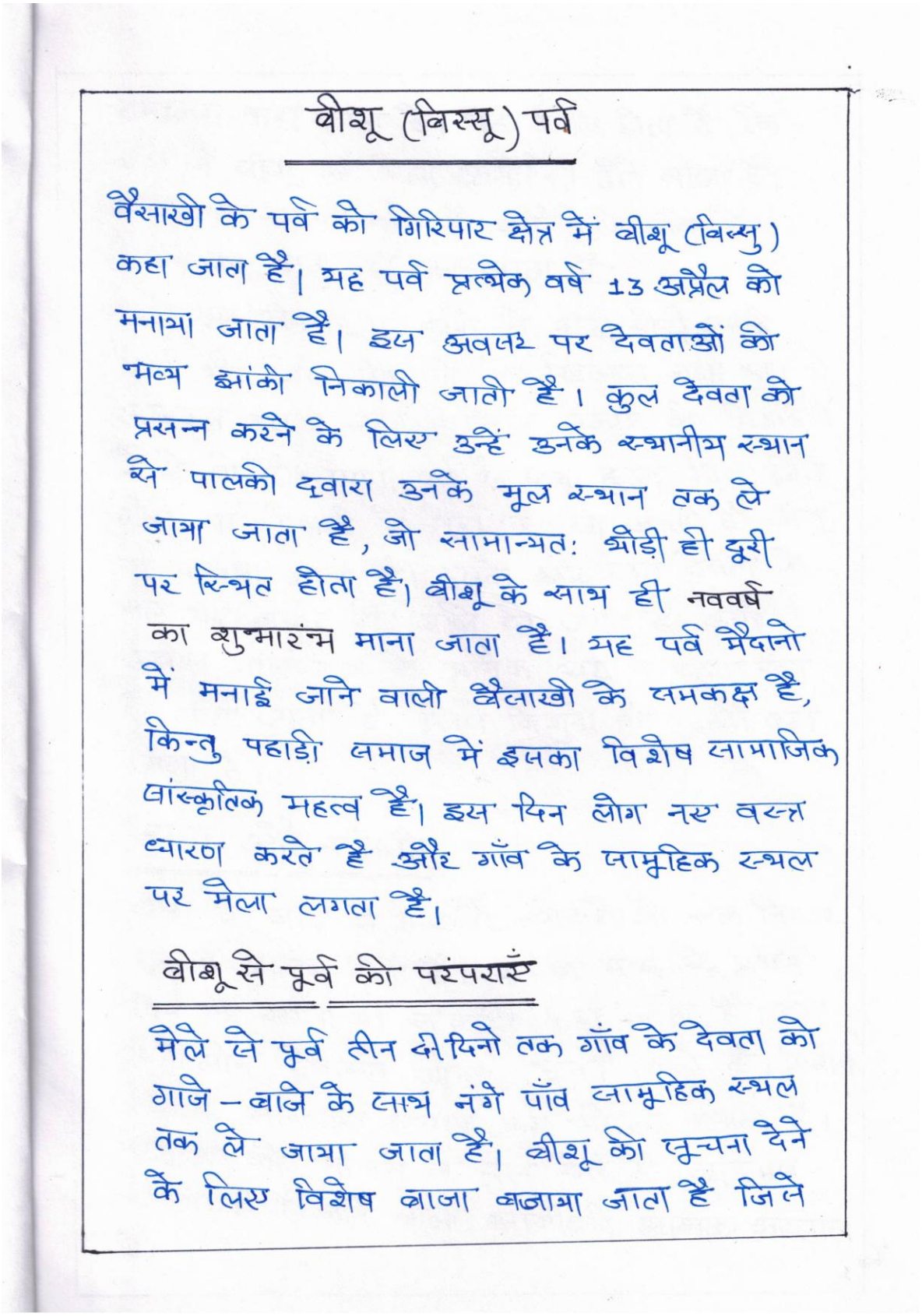

बीशू (बिस्सू) पर्व

वैसाखी के पर्व को गिरिपार क्षेत्र में बीशू (बिस्सु) कहा जाता है। यह पर्व प्रत्येक वर्ष 13 अप्रैल को मनाया जाता है। इस अवसर पर देवताओं की भव्य झांकी निकाली जाती है। कुल देवता को प्रसन्न करने के लिए उन्हें उनके स्थानीय स्थान से पालकी द्वारा उनके मूल स्थान तक ले जाया जाता है, जो सामान्यतः थोड़ी ही दूरी पर स्थित होता है। बीशू के साथ ही नववर्ष का शुभारंभ माना जाता है। यह पर्व मैदानों में मनाई जाने वाली वैसाखी के समकक्ष है, किन्तु पहाड़ी समाज में इसका विशेष सामाजिक सांस्कृतिक महत्व है। इस दिन लोग नए वस्त्र धारण करते हैं और गाँव के सामूहिक स्थल पर मेला लगता है।

बीशू से पूर्व की परंपराएँ

मेले से पूर्व तीन दो दिनों तक गाँव के देवता को गाजे-बाजे के साथ नंगे पाँव सामूहिक स्थल तक ले जाया जाता है। बीशू की सूचना देने के लिए विशेष बाजा बजाया जाता है जिसे

Figure 25: Survey report III page 2

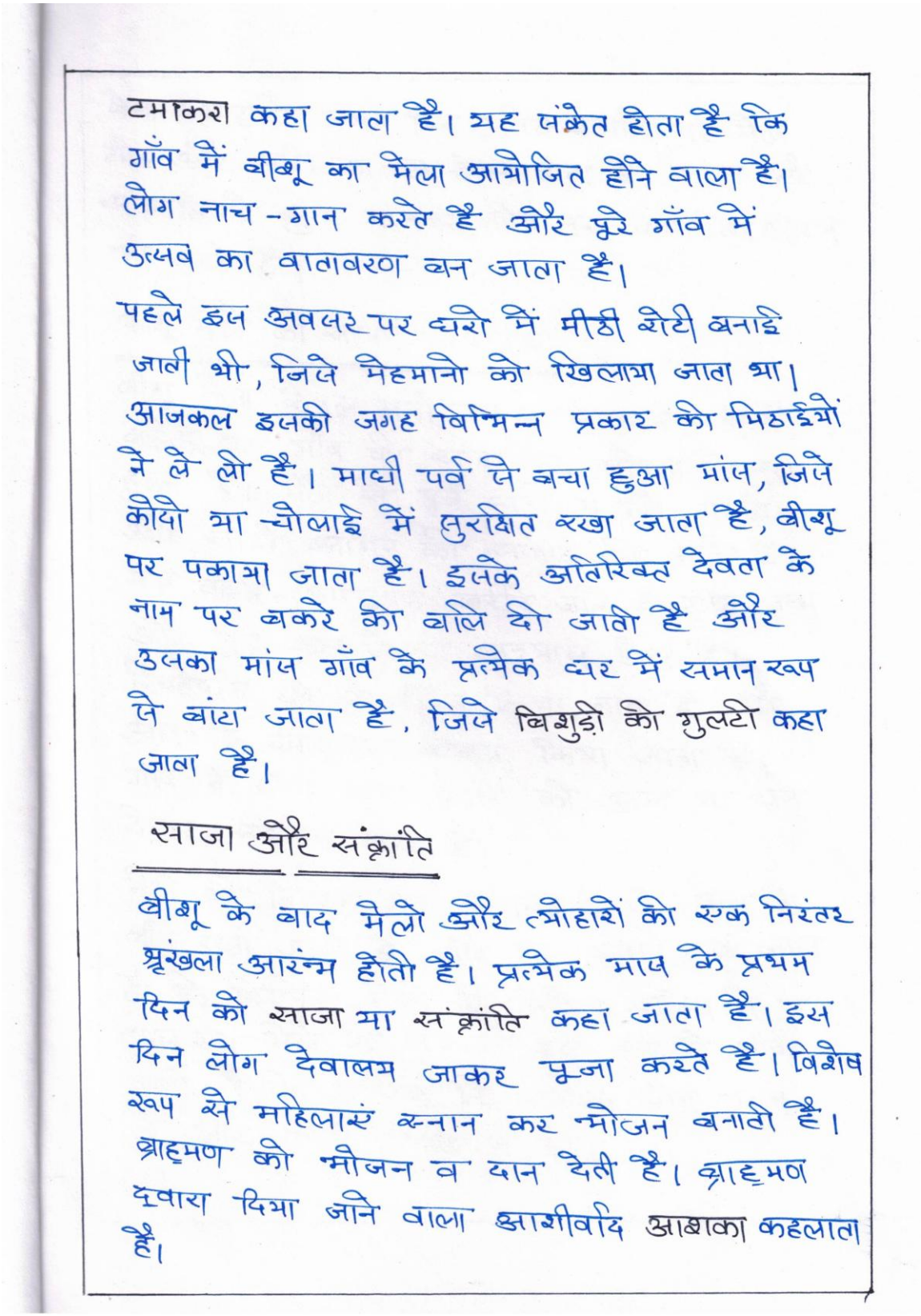

टमाकरा कहा जाता है। यह संकेत होता है कि गाँव में बीशू का मेला आयोजित होने वाला है। लोग नाच-गान करते हैं और पूरे गाँव में उत्सव का वातावरण बन जाता है।

पहले इस अवसर पर घरों में मीठी रोटी बनाई जाती थी, जिसे मेहमानों को खिलाया जाता था। आजकल इसकी जगह विभिन्न प्रकार की मिठाईयों ने ले ली है। माघी पर्व से बचा हुआ मांस, जिसे कीयो या चोलाई में सुरक्षित रखा जाता है, बीशू पर पकाया जाता है। इसके अतिरिक्त देवता के नाम पर बकरे की बलि दी जाती है और उसका मांस गाँव के प्रत्येक घर में समान रूप से बांटा जाता है, जिसे बिशुड़ी की गुलटी कहा जाता है।

साजा और संक्रांति

बीशू के बाद मेलों और त्योहारों की एक निरंतर श्रृंखला आरंभ होती है। प्रत्येक माह के प्रथम दिन को साजा या संक्रांति कहा जाता है। इस दिन लोग देवालय जाकर पूजा करते हैं। विशेष रूप से महिलाएं स्नान कर भोजन बनाती हैं। ब्राह्मण को भोजन व दान देती हैं। ब्राह्मण द्वारा दिया जाने वाला आशीर्वाद आशीका कहलाता है।

Figure 26: Survey report III page 3

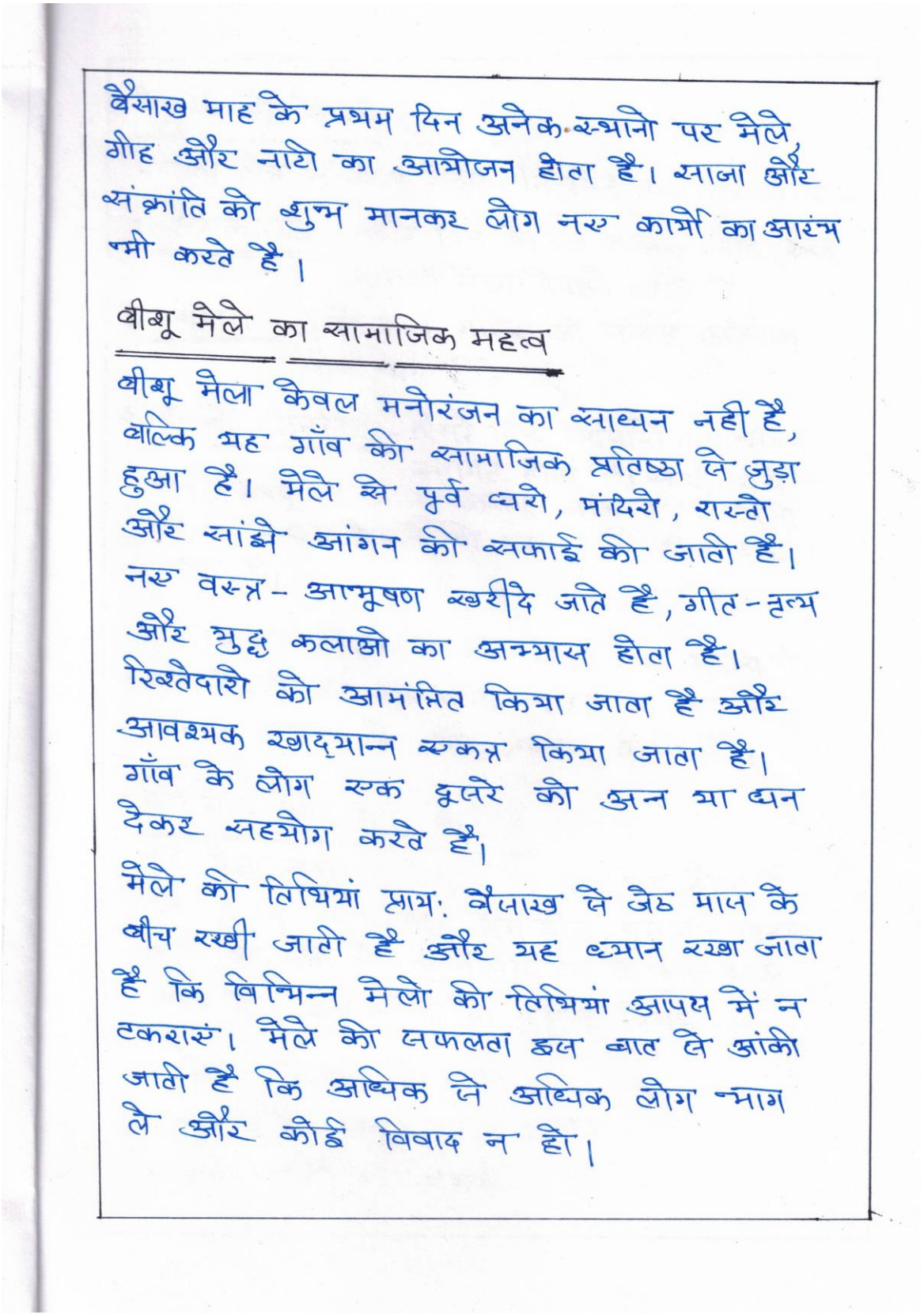

वैसाख माह के प्रथम दिन अनेक स्थानों पर मेले, गीत और नाटो का आयोजन होता है। साजा और संक्रांति को शुभ मानकर लोग नए कार्यों का आरंभ भी करते हैं।

बीशू मेले का सामाजिक महत्व

बीशू मेला केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह गाँव की सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ा हुआ है। मेले से पूर्व घरों, मंदिरों, रास्तों और सांझे आंगन की सफाई की जाती है। नए वस्त्र-आभूषण खरीदे जाते हैं, गीत-नृत्य और युद्ध कलाओं का अभ्यास होता है। रिश्तेदारों को आमंत्रित किया जाता है और आवश्यक खाद्यान्न एकत्र किया जाता है। गाँव के लोग एक दूसरे की अन्न या धन देकर सहयोग करते हैं।

मेले की तिथियां प्राय: वैसाख से जेठ माह के बीच रखी जाती हैं और यह ध्यान रखा जाता है कि विभिन्न मेलों की तिथियां आपस में न टकराएं। मेले की सफलता इस बात से आंकी जाती है कि अधिक से अधिक लोग भाग लें और कोई विवाद न हो।

Figure 27: Survey report III page 4

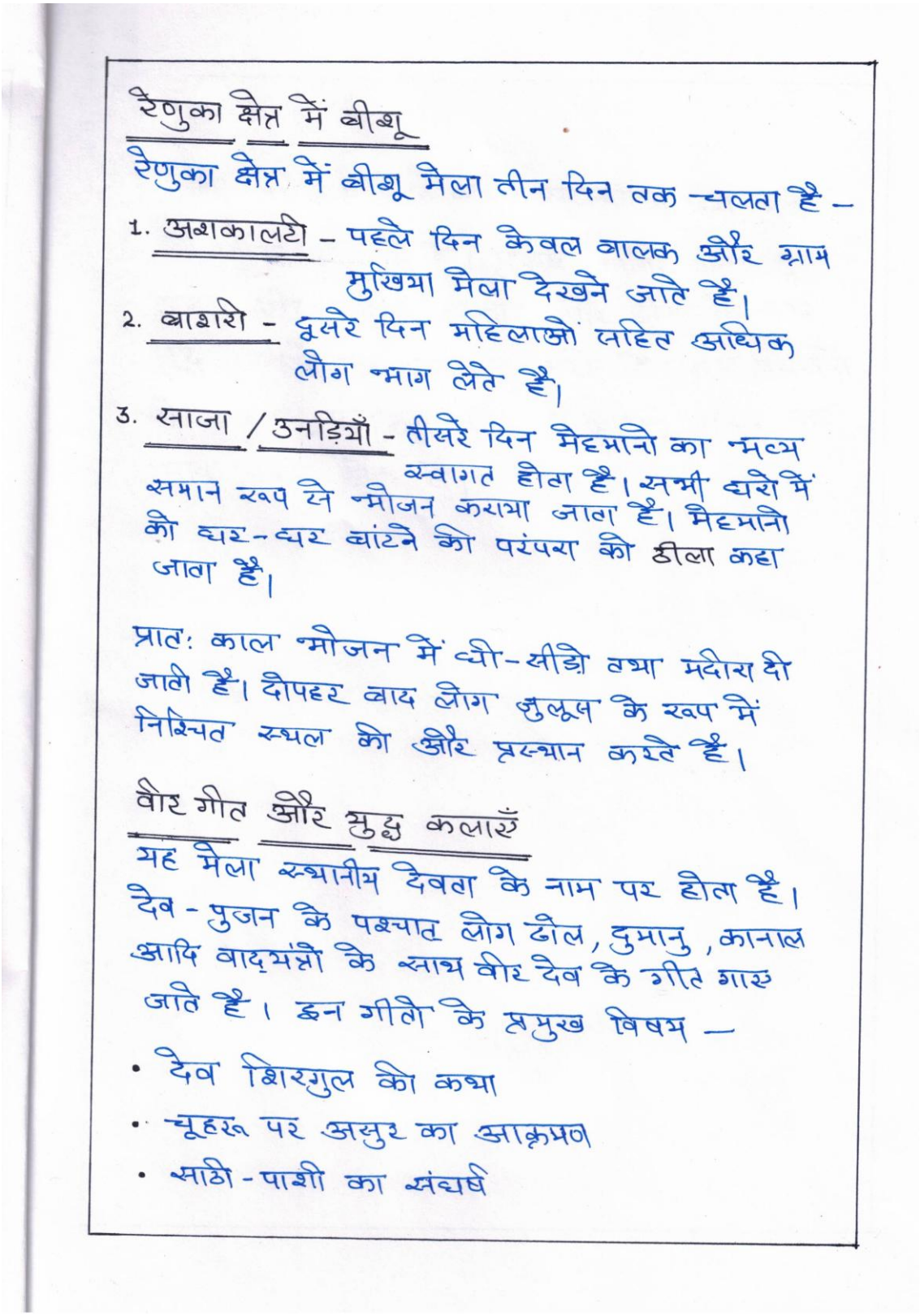

रेणुका क्षेत्र में बीशू

रेणुका क्षेत्र में बीशू मेला तीन दिन तक चलता है –

1. अशकालटो – पहले दिन केवल बालक और ग्राम मुखिया मेला देखने जाते हैं।
2. बाशरो – दूसरे दिन महिलाओं सहित अधिक लोग भाग लेते हैं।
3. साजा / उनाड़ियाँ – तीसरे दिन मेहमानों का भव्य स्वागत होता है। सभी घरों में समान रूप से भोजन कराया जाता है। मेहमानों को घर-घर बांटने की परंपरा को ठीला कहा जाता है।

प्रातः काल भोजन में घी-सीड़े तथा मदीरा दी जाती है। दोपहर बाद लोग जुलूस के रूप में निश्चित स्थल की ओर प्रस्थान करते हैं।

वीर गीत और युद्ध कलाएँ

यह मेला स्थानीय देवता के नाम पर होता है। देव-पुजन के पश्चात लोग ढोल, दुमानु, कानाल आदि वादयंत्रों के साथ वीर देव के गीत गाए जाते हैं। इन गीतों के प्रमुख विषय –

- देव शिरगुल की कथा
- चूहरू पर असुर का आक्रमण
- साठी-पाशी का संघर्ष

Figure 28: Survey report III page 5

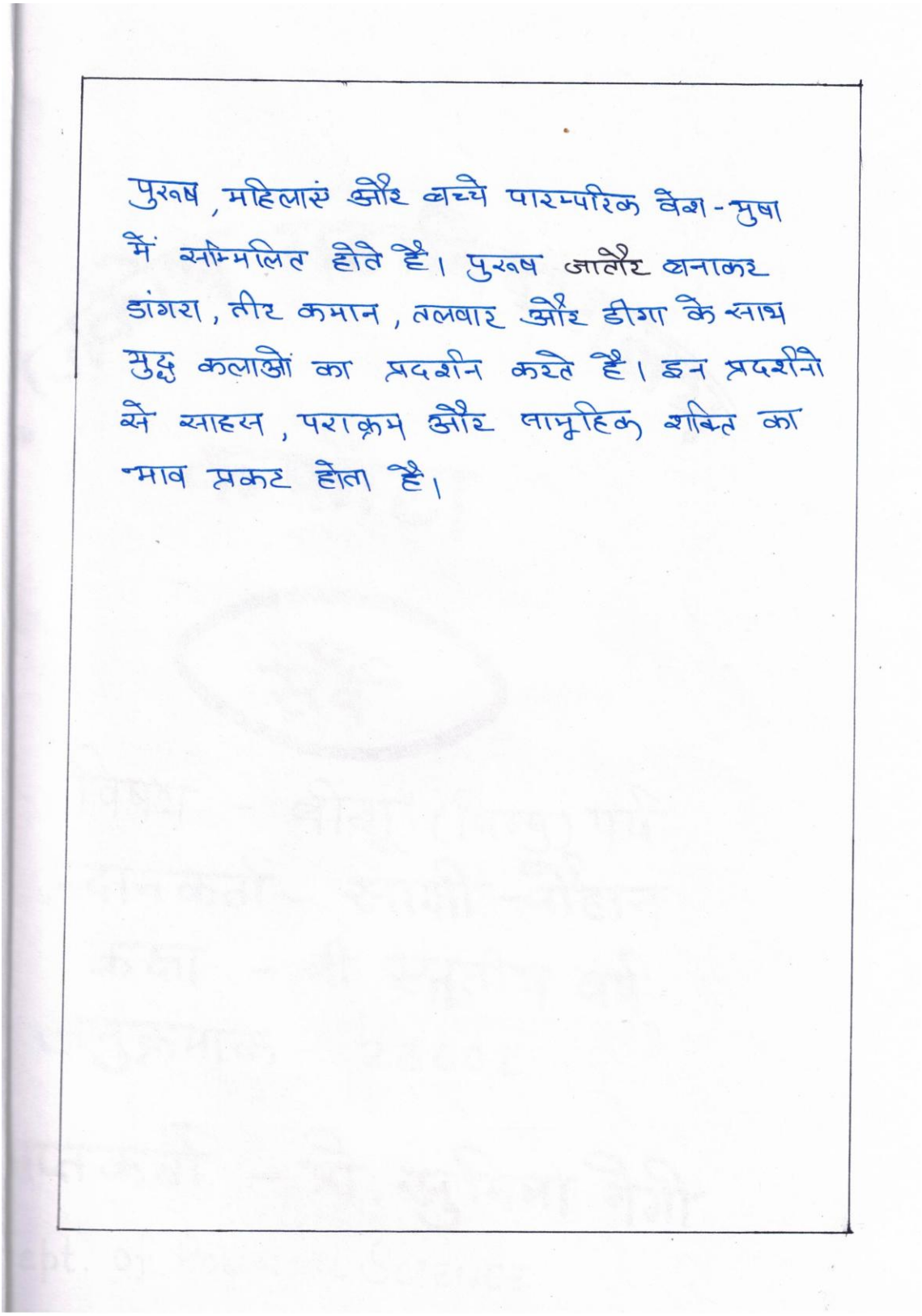
पुरुष, महिलाएं और बच्चे पारम्परिक वेश-भूषा में सम्मिलित होते हैं। पुरुष जातीय बनाकर डांगरा, तीर कमान, तलवार और ढाल के साथ युद्ध कलाओं का प्रदर्शन करते हैं। इन प्रदर्शनों से साहस, पराक्रम और सामूहिक शक्ति का भाव प्रकट होता है।

Figure 29: Survey report III page 6

विधानसभा चुनाव 2027 : सैंपल सर्वे रिपोर्ट

सर्वे का उद्देश्य

इस सैंपल सर्वे का मुख्य उद्देश्य आगामी विधानसभा चुनाव 2027 के संदर्भ में ग्रामीण मतदाताओं की राजनीतिक भागीदारी का स्तर ,प्रमुख क्षेत्रीय समस्याएँ,वर्तमान विधायक के प्रति जनमत,मतदान निर्णय को प्रभावित करने वाले कारक,सूचना के स्रोत,नए विधायक से अपेक्षाएँ का विश्लेषण करना है।

सर्वे का क्षेत्र एवं प्रतिभागी

यह सर्वे राजनीतिक विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय कफोटा द्वारा विद्यार्थियों के माध्यम से विभिन्न ग्राम पंचायतों में संचालित किया गया।

1	**विद्यार्थी**	सुमन
	कक्षा	बी.ए. द्वितीय वर्ष
	रोल नंबर	24PS001
	ग्राम पंचायत	शावगा
2	**विद्यार्थी**	**मनीषा**
	कक्षा	बी.ए. द्वितीय वर्ष
	रोल नंबर	24PS004
	ग्राम पंचायत	शिल्ला
3	**विद्यार्थी**	**साक्षी**
	कक्षा	बी.ए. द्वितीय वर्ष
	रोल नंबर	24PS003
	ग्राम पंचायत	शिल्ला

विद्यार्थियों ने विभाग द्वारा प्रदत्त प्रश्नावली के आधार पर मतदाताओं से संवाद कर आंकड़े एकत्रित किए।

प्रश्नावली की मुख्य विषयवस्तु प्रश्नावली में निम्न विषय शामिल थे

मतदान में रुचि,पूर्व मतदान अनुभव,क्षेत्र की प्रमुख समस्याएँ,वर्तमान विधायक का मूल्यांकन,विधायक के आवश्यक गुण,जनसंपर्क की आवृत्ति,मतदान का मुख्य आधार,चुनावी जानकारी के स्रोत,चुनावी वादों का प्रभाव,नए विधायक से अपेक्षाएँ

सर्वे के प्रमुख निष्कर्ष

(1) मतदान में भागीदारी

86% उत्तरदाताओं ने मतदान करने की इच्छा व्यक्त की, 10% ने नहीं और 3% अनिश्चित रहे।

Figure 30: Survey report IV page 1

→ यह लोकतांत्रिक जागरूकता का सकारात्मक संकेत है।

(2) पूर्व मतदान अनुभव
83% मतदाताओं ने पिछले चुनाव में मतदान किया था।
→ ग्रामीण क्षेत्र में मतदान सहभागिता उच्च है।

(3) क्षेत्र की प्रमुख समस्याएँ
बेरोजगारी – 60%,बिजली – 16%,शिक्षा – 6%,पानी – 6%,स्वास्थ्य – 3% अन्य – 6%
कानून व्यवस्था व सड़क – नगण्य
→ बेरोजगारी सबसे बड़ी चिंता के रूप में उभरी।

(4) वर्तमान विधायक का मूल्यांकन
बिल्कुल कार्य नहीं – 93%,बहुत अच्छा – 3%,ठीक-ठाक – 3%, खराब – 0%
→ अधिकांश जनता वर्तमान प्रतिनिधित्व से असंतुष्ट दिखाई दी।

(5) विधायक में आवश्यक गुण
ईमानदारी – 43%,क्षेत्र में उपलब्धता – 10%,अनुभव – 10%,विकास कार्य – 6%,पार्टी – 3% अन्य – 10%
→ जनता व्यक्तित्व और ईमानदारी को प्राथमिकता देती है।

(6) जनसंपर्क की अपेक्षित आवृत्ति
हर महीने – 63%,तीन महीने में – 23%,साल में 1–2 बार – 17%
→ जनता नियमित संवाद चाहती है।

(7) मतदान का मुख्य आधार
विकास कार्य – 60%,पार्टी – 23%,उम्मीदवार – 3%' जाति/समुदाय – 14%
→ विकास आधारित राजनीति की प्रवृत्ति स्पष्ट है।

(8) चुनावी जानकारी का स्रोत
मोबाइल/सोशल मीडिया – 36%,टीवी – 23%,अखबार – 23%,लोगों से – 13%,पोस्टर/रैली – 3%
→ डिजिटल मीडिया का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है।

(9) चुनावी वादों का प्रभाव
बिल्कुल नहीं – 73%,थोड़ा – 13% बहुत ज्यादा – 13%
→ मतदाता अब वादों की बजाय वास्तविक कार्यों को महत्व देते हैं।

(10) नए विधायक से अपेक्षाएँ
29 उत्तरदाताओं ने स्वास्थ्य, रोजगार और शिक्षा में सुधार की अपेक्षा व्यक्त की।

Figure 31: Survey report IV page 2

समग्र निष्कर्ष

यह सर्वे स्पष्ट करता है कि ग्रामीण मतदाता राजनीतिक रूप से जागरूक हैं,विकास और रोजगार प्रमुख मुद्दे हैं,डिजिटल माध्यम चुनावी जानकारी का मुख्य स्रोत बन चुका है,जनता ईमानदार एवं उपलब्ध प्रतिनिधि चाहती है व चुनावी वादों की अपेक्षा वास्तविक कार्य को प्राथमिकता दी जा रही है

आभार

राजनीतिक विज्ञान विभाग विद्यार्थियों के समर्पित प्रयास एवं ग्रामीण जनता के सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता है, जिनके सहयोग से यह सर्वे सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

सुमित्रा नेगी
सहायक आचार्य
राजनीतिक विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय कफोटा

Figure 32: Survey report IV page 3

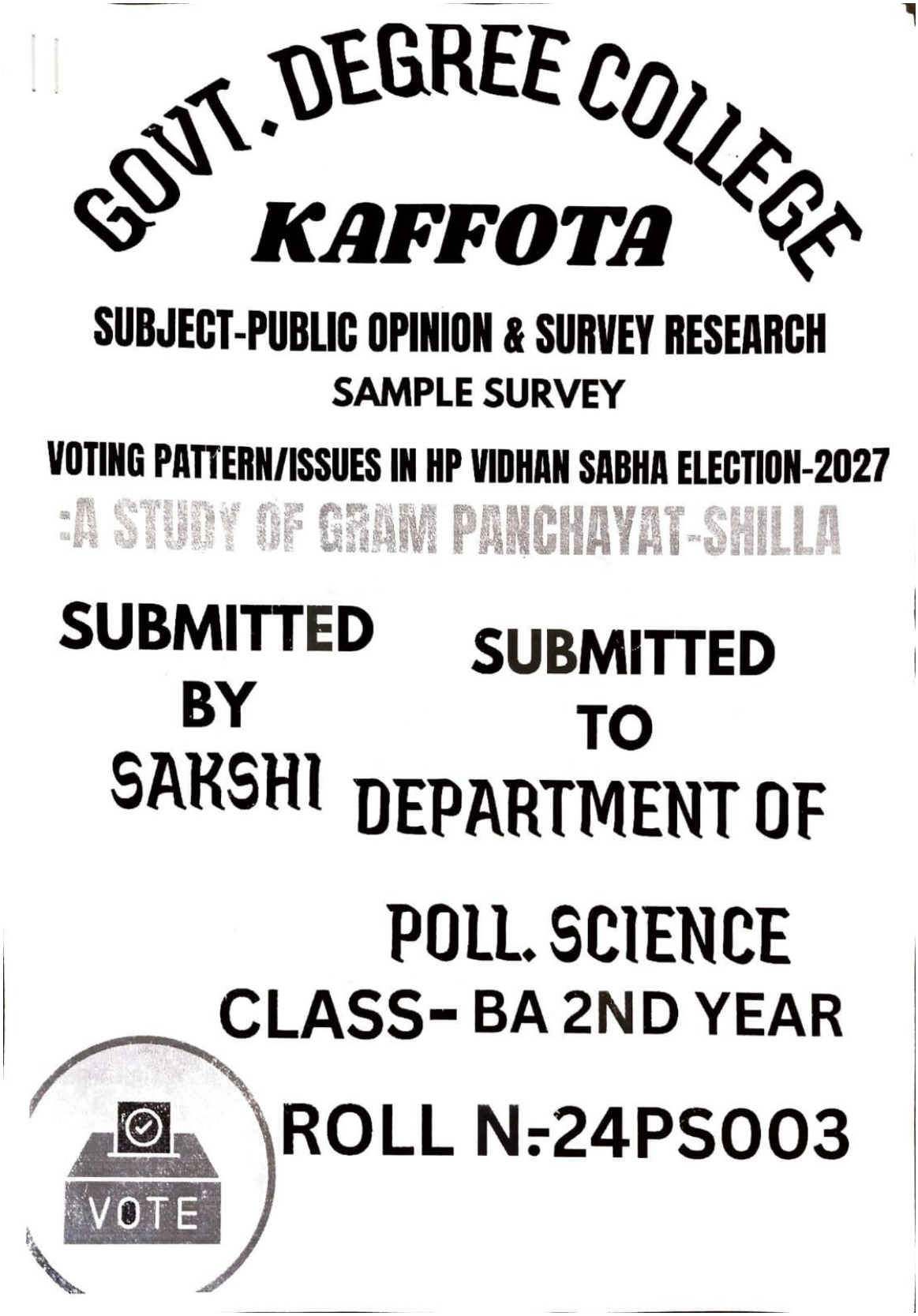

Figure 33: Questionnaire I page 1

विधानसभा चुनाव – 2027 सेम्पल सर्वे

उत्तरदाता का विवरण (Respondent Details)

उत्तरदाता का नाम: श्री तुलसीराम शर्मा **पिता / पति का नाम:** श्री कालू राम शर्मा **गाँव / वार्ड का नाम:** [illegible] **पंचायत / नगर परिषद:** शिल्ला **विधानसभा क्षेत्र:** शिलाई **मोबाइल नंबर (वैकल्पिक):** 7091035125

उम्र: ☐ 18–25 ☐ 26–35 ☐ 36–45 ☐ 46–60 ☑ 60 से अधिक

लिंग: ☑ पुरुष ☐ महिला ☐ अन्य

व्यवसाय: ☑ किसान ☐ मजदूर ☐ व्यापारी ☐ नौकरीपेशा ☐ छात्र ☐ गृहिणी ☐ अन्य ________

सर्वे प्रश्नावली

1. क्या आप इस विधानसभा चुनाव में वोट देंगे?
   ☑ हाँ ☐ नहीं ☐ तय नहीं
2. आपने पिछले विधानसभा चुनाव में वोट दिया था?
   ☑ हाँ ☐ नहीं
3. आपके क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या क्या है?
   ☐ सड़क ☐ बिजली ☐ पानी ☐ बेरोजगारी ☐ शिक्षा ☐ स्वास्थ्य ☐ कानून-व्यवस्था ☑ अन्य ___
4. आपको क्या लगता है, वर्तमान विधायक ने इन समस्याओं पर काम किया है?
   ☑ बहुत अच्छा ☐ ठीक-ठाक ☐ खराब ☐ बिल्कुल नहीं
5. आप विधायक में कौन-सा गुण सबसे जरूरी मानते हैं?
   ☐ ईमानदारी ☑ क्षेत्र में उपलब्धता ☐ विकास कार्य ☐ अनुभव ☐ पार्टी ☐ अन्य
6. विधायक को कितनी बार जनता से मिलना चाहिए?
   ☐ हर महीने ☐ 3 महीने में ☑ साल में 1–2 बार
7. वोट देने का मुख्य कारण क्या होगा?
   ☐ उम्मीदवार ☐ पार्टी ☑ विकास कार्य ☐ जाति/समुदाय ☐ सरकारी योजनाएँ
8. आपको चुनावी जानकारी कहाँ से मिलती है?
   ☐ टीवी ☐ मोबाइल/सोशल मीडिया ☐ अखबार ☐ पोस्टर/रैली ☑ लोगों से
9. क्या चुनावी वादे आपके वोट को प्रभावित करते हैं?
   ☐ बहुत ज्यादा ☐ थोड़ा ☑ बिल्कुल नहीं
10. आप नए विधायक से सबसे पहला कौन-सा काम करवाना चाहते हैं?

Ans.......... विकास के कार्य करना ....

तुलसी राम शर्मा

Signature of Respondent

Figure 34: Questionnaire I page 2

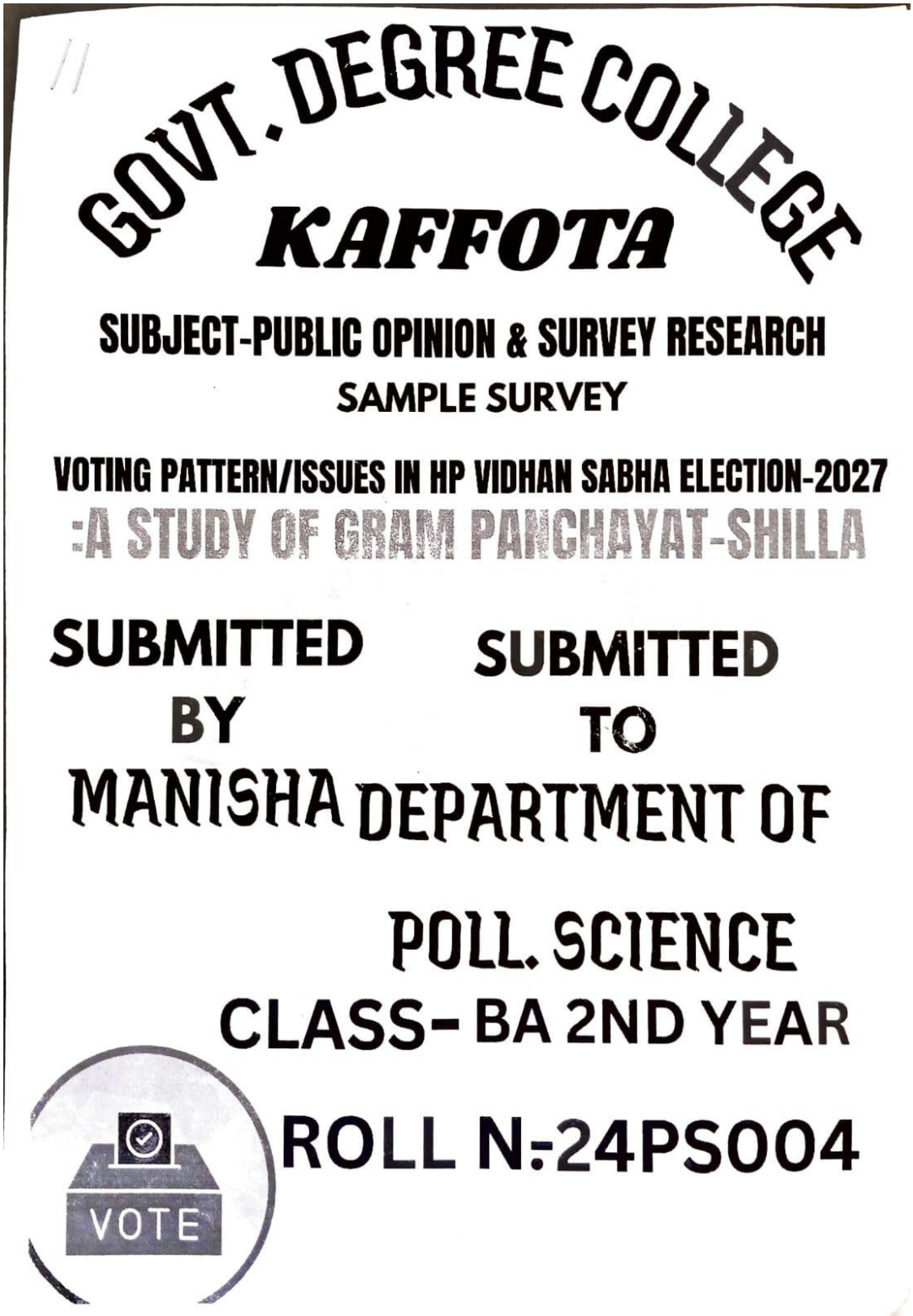
GOVT. DEGREE COLLEGE

KAFFOTA

SUBJECT-PUBLIC OPINION & SURVEY RESEARCH

SAMPLE SURVEY

VOTING PATTERN/ISSUES IN HP VIDHAN SABHA ELECTION-2027

:A STUDY OF GRAM PANCHAYAT-SHILLA

SUBMITTED BY

MANISHA

SUBMITTED TO

DEPARTMENT OF POLL. SCIENCE

CLASS- BA 2ND YEAR

ROLL N:-24PS004

Figure 35: Questionnaire II page 1

विधानसभा चुनाव – 2027 सेम्पल सर्वे

उत्तरदाता का विवरण (Respondent Details)
उत्तरदाता का नाम: श्रीमती रक्षा देवी **पिता / पति का नाम:** श्रीमान खजान सिंह **गाँव / वार्ड का नाम:** मतला **पंचायत / नगर परिषद:** शावगा **विधानसभा क्षेत्र:** शिलाई **मोबाइल नंबर (वैकल्पिक):** 8894952245 ।.
उम्र: ☐ 18–25 ☐ 26–35 ☑ 36–45 ☐ 46–60 ☐ 60 से अधिक
लिंग: ☐ पुरुष ☑ महिला ☐ अन्य
व्यवसाय: ☐ किसान ☑ मजदूर ☐ व्यापारी ☐ नौकरीपेशा ☐ छात्र ☐ गृहिणी ☐ अन्य ________

सर्वे प्रश्नावली

1. क्या आप इस विधानसभा चुनाव में वोट देंगे?
   ☑ हाँ ☐ नहीं ☐ तय नहीं
2. आपने पिछले विधानसभा चुनाव में वोट दिया था?
   ☑ हाँ ☐ नहीं
3. आपके क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या क्या है?
   ☐ सड़क ☑ बिजली ☐ पानी ☐ बेरोजगारी ☐ शिक्षा ☐ स्वास्थ्य ☐ कानून-व्यवस्था ☐ अन्य ___
4. आपको क्या लगता है, वर्तमान विधायक ने इन समस्याओं पर काम किया है?
   ☐ बहुत अच्छा ☐ ठीक-ठाक ☐ खराब ☑ बिल्कुल नहीं
5. आप विधायक में कौन-सा गुण सबसे जरूरी मानते हैं?
   ☑ ईमानदारी ☐ क्षेत्र में उपलब्धता ☐ विकास कार्य ☐ अनुभव ☐ पार्टी ☐ अन्य
6. विधायक को कितनी बार जनता से मिलना चाहिए?
   ☑ हर महीने ☐ 3 महीने में ☐ साल में 1–2 बार
7. वोट देने का मुख्य कारण क्या होगा?
   ☐ उम्मीदवार ☐ पार्टी ☑ विकास कार्य ☐ जाति/समुदाय ☐ सरकारी योजनाएँ
8. आपको चुनावी जानकारी कहाँ से मिलती है?
   ☑ टीवी ☐ मोबाइल/सोशल मीडिया ☐ अखबार ☐ पोस्टर/रैली ☐ लोगों से
9. क्या चुनावी वादे आपके वोट को प्रभावित करते हैं?
   ☐ बहुत ज्यादा ☐ थोड़ा ☑ बिल्कुल नहीं
10. आप नए विधायक से सबसे पहला कौन-सा काम करवाना चाहते हैं?
   Ans: हम अपने गाँव में बिजली की समस्या को पूरा करवाना चाहते हैं।

रक्षा देवी
Signature of Respondent

Figure 36: Questionnaire II page 2

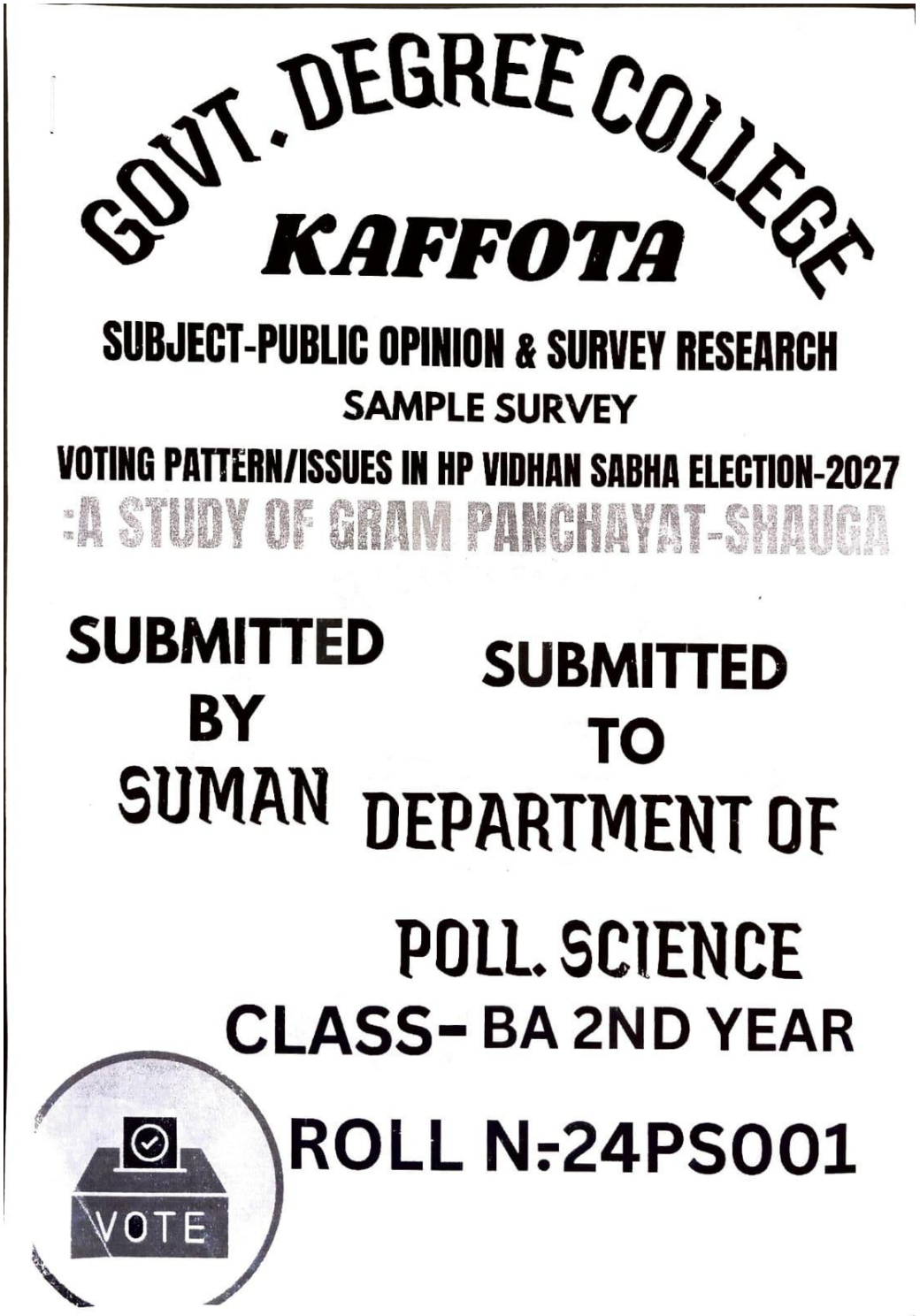

Figure 36: Questionnaire III page 1

विधानसभा चुनाव – 2027 सेम्पल सर्वे

उत्तरदाता का विवरण (Respondent Details)

उत्तरदाता का नाम: कमो देवी **पिता / पति का नाम:** श्री बाबू राम **गाँव / वार्ड का नाम:** चेउ **पंचायत / नगर परिषद:** शिल्ली **विधानसभा क्षेत्र:** शिल्लाई **मोबाइल नंबर (वैकल्पिक):** 8629056987

उम्र: ☐ 18–25 ☑ 26–35 ☐ 36–45 ☐ 46–60 ☐ 60 से अधिक

लिंग: ☐ पुरुष ☑ महिला ☐ अन्य

व्यवसाय: ☐ किसान ☐ मजदूर ☐ व्यापारी ☐ नौकरीपेशा ☐ छात्र ☑ गृहिणी ☐ अन्य ________

सर्वे प्रश्नावली

1. क्या आप इस विधानसभा चुनाव में वोट देंगे?
   ☑ हाँ ☐ नहीं ☐ तय नहीं
2. आपने पिछले विधानसभा चुनाव में वोट दिया था?
   ☑ हाँ ☐ नहीं
3. आपके क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या क्या है?
   ☐ सड़क ☐ बिजली ☐ पानी ☑ बेरोजगारी ☐ शिक्षा ☐ स्वास्थ्य ☐ कानून-व्यवस्था ☐ अन्य ___
4. आपको क्या लगता है, वर्तमान विधायक ने इन समस्याओं पर काम किया है?
   ☐ बहुत अच्छा ☐ ठीक-ठाक ☐ खराब ☑ बिल्कुल नहीं
5. आप विधायक में कौन-सा गुण सबसे जरूरी मानते हैं?
   ☑ ईमानदारी ☐ क्षेत्र में उपलब्धता ☐ विकास कार्य ☐ अनुभव ☐ पार्टी ☐ अन्य
6. विधायक को कितनी बार जनता से मिलना चाहिए?
   ☑ हर महीने ☐ 3 महीने में ☐ साल में 1–2 बार
7. वोट देने का मुख्य कारण क्या होगा?
   ☐ उम्मीदवार ☐ पार्टी ☑ विकास कार्य ☐ जाति/समुदाय ☐ सरकारी योजनाएँ
8. आपको चुनावी जानकारी कहाँ से मिलती है?
   ☐ टीवी ☑ मोबाइल/सोशल मीडिया ☐ अखबार ☐ पोस्टर/रैली ☐ लोगों से
9. क्या चुनावी वादे आपके वोट को प्रभावित करते हैं?
   ☐ बहुत ज्यादा ☐ थोड़ा ☑ बिल्कुल नहीं
10. आप नए विधायक से सबसे पहला कौन-सा काम करवाना चाहते हैं?

Ans....... बेरोजगारी ....

कमो देवी
Signature of Respondent

Figure 37: Questionnaire III page 2

निष्कर्ष

यह सेम्पल सर्वे दर्शाता है कि ग्रामीण मतदाता अब पहले की तुलना में अधिक जागरूक हो चुके हैं और विकास, शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसे मुद्दों को प्राथमिकता दे रहे हैं। साथ ही पारंपरिक चुनावी प्रथाओं का प्रभाव धीरे-धीरे कम हो रहा है। यह सर्वे विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हुआ।

सहायक आचार्य
सुमित्रा नेगी
राजनीतिक शास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय कफोटा

Figure 38: Questionnaire III page 3

iii. Educational Tours

Educational tours and field visits are organised to provide students with experiential learning beyond the classroom. These tours are designed to complement curricular requirements and expose students to historical sites, ecological settings, cultural heritage, and academic institutions, thereby enriching their understanding through direct observation and interaction.

Photograph 1: Students ready to board the bus for educational tour, GDC Kaffota campus.

Photograph 2: Educational Tour to Renuka Ramsar Site and Wildlife Sanctuary

Photograph 3: Students at Renuka Wildlife Sanctuary

Photograph 4: Students being briefed by the Wildlife Sanctuary Staff, Renuka

iv. Industry Visits

Industry visits are organised to familiarise students with industrial processes, organisational structures, workplace practices, and emerging trends. Such visits help bridge the gap between theoretical knowledge and practical application, and enhance students' awareness of employment opportunities and professional environments.

Photograph 5: Industrial Visit to Tirupati Group of Pharma, Paonta Sahib

Photograph 6: GDC Kaffota Students Inside Tirupati Wellness Paonta Sahib